International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Special Issue on Advancing Multidisciplinary Research and Analysis - Exploring Innovations | April 2024
Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

भारतीय विदेश नीति के नवीन आयाम – एक विवेचनात्मक अनुशीलन (सन 2014 से वर्त्तमान तक)

Dr. Sucheta Verma

Assistant Professor, Political Science, SPC Govt. College, Ajmer, Rajasthan, India

सार

वर्ष 1947 में भारत की स्वतंत्रता से लेकर अब तक विश्व व्यापक रूप से बदल चुका है। इस दौरान अमेरिका और सोवियत संघ के द्विध्रुवीय विश्व से लेकर अमेरिकी आधिपत्य के एक संक्षिप्त एकध्रुवीय काल तक और अब चीन एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के द्विध्रुवीय प्रतियोगिता की ओर आगे बढ़ने से लेकर बहुध्रुवीयता के एक भ्रम तक विश्व ने कई स्वरुप देखे हैं।

आज के इस विशृंखल विश्व में भारत को अपनी विशिष्ट विदेश नीति पहचान को परिभाषित करने और नैतिक मूल्यों के साथ राष्ट्रीय हित को संतुलित करने के लिये अपनी संलग्नता की रूपरेखा को आकार देने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।

परिचय

'स्टेट' और 'नेशन' के बीच क्या अंतर है?

- स्टेट (State) या राज्य में चार तत्त्व होते हैं- जनसंख्या, क्षेत्र, सरकार और संप्रभुता।
  - जबकि नेशन (Nation) या राष्ट्र साझा जातीयता, इतिहास, परंपराओं और आकांक्षाओं पर आधारित एक समुदाय होता है।
- एक वैधानिक निकाय के रूप में राज्य अपने लोगों की सुरक्षा एवं कल्याण के लिये उत्तरदायी है और यह बाह्य मानवीय कार्यकरण से संबंधित है।
  - जबकि राष्ट्र उन लोगों का एक निकाय होता है जो भावनात्मक, आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक रूप से एकजुट होते हैं।
- क्षेत्र (Territory) भी राज्य का एक अनिवार्य अंग होता है, क्योंकि यह राज्य का भौतिक तत्त्व होता है।
  - लेकिन एक राष्ट्र के लिये, क्षेत्र इसका अनिवार्य अंग नहीं है। राष्ट्र एक निश्चित क्षेत्र के बिना भी अस्तित्व में रह सकता है।
- अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा जैसे देशों में राज्य में कई राष्ट्र शामिल हैं और इस प्रकार वे 'बहुराष्ट्रीय समाज' (Multinational societies) हैं।

भारत की विदेश नीति अपने सक्रिय राष्ट्रीय हित को कैसे परिलक्षित करती है?

- 'इंडिया फर्स्ट' की नीति: स्वतंत्रता के 75 वर्षों के साथ देश में 'इंडिया फर्स्ट' की विदेश नीति को अभिव्यक्त करने का वृहत आत्म-विश्वास और आशावाद मौजूद है। भारत अपने लिये स्वयं निर्णय लेता है और इसकी स्वतंत्र विदेश नीति किसी भयादोहन या दबाव के अधीन नहीं लाई जा सकती।
  - विश्व की लगभग 1/5 आबादी के साथ भारत को अपना स्वयं का पक्ष चुनने और अपने हितों का ध्यान रखने का अधिकार है।[1,2,3]
- यह निश्चित रूप से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का एक मूल तत्त्व है कि राष्ट्रीय हित सर्वोपरि हैं और भारत ने भी अन्य देशों की तरह विदेशी एवं राष्ट्रीय सुरक्षा नीतियों के अनुपालन में अपने हितों पर बल दिया है।
- यथार्थवादी कूटनीति: आज के आत्मविश्वास से परिपूर्ण भारत के पास वैश्विक फलक पर अपनी नई आवाज़ है जिसकी जड़ें घरेलू वास्तविकताओं एवं सभ्यतागत लोकाचार में निहित होने के साथ ही स्वयं के प्रमुख हितों की खोज में गहराई से जमी हैं।
  - जैसा कि भारतीय विदेश मंत्री ने 'रायसीना डायलॉग' में टिप्पणी की थी कि ''विश्व को खुश करने की कोशिश करने के बजाय 'हम कौन हैं' के आधार पर विश्व से संलग्न होना बेहतर है।'' भारत अपनी पहचान और प्राथमिकताओं को लेकर पर्याप्त आत्म-विश्वास रखता है, दुनिया भारत के साथ इसकी शर्तों पर संलग्न होगी।
- अपने लाभ के लिये शक्ति संतुलन बनाए रखना: चीन की 'बेल्ट एंड रोड' पहल को वर्ष 2014 में ही चुनौती दे देने वाली एकमात्र वैश्विक शक्ति होने से लेकर एक मज़बूत सैन्य कार्रवाई के साथ चीनी सैन्य आक्रमण का जवाब देने वाले देश के रूप में भारत ने दृढ़ता का परिचय दिया है।
  - दूसरी ओर, भारत ने किसी औपचारिक गठबंधन में शामिल हुए बिना ही अमेरिका के साथ एक कार्यकरण संबंध का विकास किया है और घरेलू क्षमताओं के निर्माण के लिये पश्चिमी देशों से संलग्नता बढ़ाई है।
- भारत संलग्नता में अत्यंत व्यावहारिक रहा है और शक्ति के मौजूदा संतुलन का उपयोग अपने लाभ के लिये करने की इच्छा रखता है।[4,5,6]
- बढ़ते आर्थिक संबंध: चूँकि शेष विश्व के साथ भारत की आर्थिक अन्योन्याश्रयता गहरी होती गई है, यह अपने उत्पादों, कच्चे माल के स्रोतों और इसके विस्तारित विदेशी सहायता के संभावित प्राप्तकर्त्ताओं के लिये बाज़ारों के प्रति अधिक चौकस हो गया है।

बहु-संरेखित/बहुपक्षीय दृष्टिकोण: चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड/Quad) से लेकर ब्रिक्स (BRICS) तक, भारत कई समूहों की सदस्यता रखता है।

प्रायः इसे पुरानी शैली की संलग्नता के रूप में देखा जाता है। हालाँकि भारत अपनी प्राथमिकताओं को अधिक प्रत्यक्ष तरीके से अभिव्यक्त और प्रोत्साहित करने लगा है।

हस्तक्षेप और अनुचित हस्तक्षेप: भारत अन्य देशों के आंतरिक मामलों में अनुचित हस्तक्षेप (Interference) में विश्वास नहीं करता है।

हालाँकि, यदि किसी देश द्वारा किये गए किसी सायास या निष्प्रयास कार्यकरण में भारत के राष्ट्रीय हितों को प्रभावित करने की क्षमता है तो

भारत त्वरित और समयबद्ध हस्तक्षेप (Intervention) करने में संकोच नहीं करता है।

भारत की विदेश नीति के नैतिक पहलू

पंचशील (Five Virtues): 29 अप्रैल, 1954 को हस्ताक्षरित 'चीन के तिब्बत क्षेत्र और भारत के के बीच व्यापार समझौते' में पहली बार व्यावहारिक रूप से 'पंचशील' के सिद्धांत को अपनाया गया था, जो बाद में विश्व स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिये आचरण के आधार के रूप में विकसित हुआ।

ये पाँच सिद्धांत हैं:

एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिये परस्पर सम्मान

परस्पर गैर-आक्रामकता

परस्पर गैर-हस्तक्षेप

समानता और पारस्परिक लाभ

शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व

वसुधैव कुटुम्बकम् (The World is One Family): 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भारतीय दर्शन 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' की अवधारणा को आधार प्रदान करता है।

दूसरे शब्दों में, भारत संपूर्ण विश्व समुदाय को एकल वृहत वैश्विक परिवार के रूप में देखता है, जहाँ इसके सदस्य सद्भाव से रहते हैं, एक साथ कार्य एवं विकास करते हैं और एक दूसरे पर भरोसा करते हैं।[7,8,9]

सक्रिय और निष्पक्ष सहायता: भारत जहाँ भी संभव हो, लोकतंत्र को बढ़ावा देने में संकोच नहीं करता है।

- यह क्षमता निर्माण और लोकतंत्र की संस्थाओं को सशक्त करने में सक्रिय रूप से सहायता प्रदान करने के रूप में किया जाता है, यद्यपि ऐसा संबंधित सरकार की स्पष्ट सहमति से किया जाता है (उदाहरण के लिये अफगानिस्तान)।
- वैश्विक समस्या समाधान दृष्टिकोण: भारत विश्व व्यापार व्यवस्था, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, बौद्धिक संपदा अधिकार, वैश्विक शासन, स्वास्थ्य संबंधी खतरे जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर वैश्विक बहस एवं वैश्विक सहमति की वकालत करता है।
  - 'वैक्सीन डिप्लोमेसी' पहल के तहत भारत ने 60 मिलियन खुराक का निर्यात किया, जिनमें से आधे वाणिज्यिक शर्तों पर और 10 मिलियन अनुदान के रूप में प्रदान किये गए।

भारतीय विदेश नीति के समक्ष विद्यमान वर्तमान चुनौतियाँ

- रूस-यूक्रेन संघर्ष: यह निश्चित रूप से एक जटिल अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक मुद्दा है जहाँ भारत जैसे देशों के लिये राजनीति और नैतिक अनिवार्यता के बीच एक पक्ष चुनना कठिन कार्य है।
  - रूस भारत का व्यापार भागीदार है जिसे यूरेशियाई क्षेत्र में एक बढ़त प्राप्त है। प्रत्यक्ष रूप से रूस के विरुद्ध जाकर भारत इस क्षेत्र में अपने हितों को खतरे में डाल देगा।
- जैसा कि यथार्थवादी विवेक की मांग है, भारत रूस-यूक्रेन संघर्ष पर राजनीति के निर्देशों की उपेक्षा करते हुए सीधे एक नैतिक दृष्टिकोण नहीं अपना सकता।
- आंतरिक चुनौतियाँ: कोई देश बाह्य विश्व में शक्तिशाली नहीं हो सकता यदि वह घरेलू स्तर पर दुर्बल है।
  - भारत का 'सॉफ्ट पावर' तब उपयोगी होगा जब इसे 'हार्ड पावर' का समर्थन प्राप्त होगा।
- भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने बार-बार ज़ोर देते हुए कहा था कि भारत विश्व मंच पर तभी प्रभावी भूमिका निभा सकता है जब वह आंतरिक और बाह्य, दोनों रूप से सशक्त हो।
- शरणार्थी संकट: वर्ष 1951 के शरणार्थी सम्मेलन और इसके 1967 के प्रोटोकॉल का एक पक्षकार नहीं होने के बावजूद भारत विश्व में शरणार्थियों के सबसे बड़े स्थल वाले देशों में से एक रहा है।
  - यहाँ चुनौती मानवाधिकारों और राष्ट्रीय हितों के संरक्षण को संतुलित करने की है। रोहिंग्या संकट के उभार के साथ प्रकट है कि समस्या के दीर्घकालिक समाधान के लिये भारत द्वारा अभी भी बहुत कुछ किया कर सकता है।
  - ये कार्रवाइयाँ मानवाधिकार के मामलों पर भारत की क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिति को निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी।[10,11,12]
- पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिये सामूहिक दृष्टिकोण: भारत में वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने में अग्रणी भूमिका निभाने की क्षमता है, जो वर्ष 2070 तक 'नेट ज़ीरो' तक पहुँचने के लक्ष्य (वर्ष 2021 में आयोजित 26वें संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में घोषित) में परिलक्षित होती है।
  - पर्यावरणीय समस्याएँ सामाजिक प्रक्रियाओं से जुड़ी हुई हैं। सामाजिक, आर्थिक और साथ ही पारिस्थितिक स्तर पर संवहनीयता प्राप्त करने की आवश्यकता है जैसा कि सतत् विकास लक्ष्यों में रेखांकित किया गया है।
- आंतरिक और बाह्य विकास को संतुलित करना: भारत को एक बाह्य वातावरण के निर्माण के लिये प्रयास करना चाहिये जो भारत के समावेशी विकास के अनुकूल हो, ताकि विकास का लाभ देश के निर्धनतम व्यक्ति तक पहुँच सके।
  - यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि वैश्विक मंचों पर भारत की आवाज़ सुनी जाए और भारत आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, निरस्त्रीकरण, वैश्विक शासन से संबद्ध संस्थानों के सुधार जैसे वैश्विक आयामों के मुद्दों पर विश्व के विचार को प्रभावित करने में सक्षम हो।
- विदेश नीति में नैतिक मूल्यों का प्रवेश कराना: महात्मा गांधी ने कहा है कि सिद्धांत और नैतिकता से रहित राजनीति विनाशकारी होगी। भारत को नैतिक अनुनय के साथ सामूहिक विकास की ओर बढ़ना चाहिये और विश्व में अपने नैतिक नेतृत्व को पुनः प्राप्त करना चाहिये।
- बुनियादी सिद्धांतों को बनाए रखने के साथ-साथ नीति विकास: हम एक गतिशील दुनिया में रह रहे हैं। इसलिये भारत की विदेश नीति को सक्रिय एवं लचीला होने के साथ ही व्यावहारिक होना होगा ताकि उभरती परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया के लिये इसका त्वरित समायोजन किया जा सके।
  - हालाँकि अपनी विदेश नीति के कार्यान्वयन में भारत हमेशा बुनियादी सिद्धांतों की एक शृंखला का पालन करता है, जिस पर कोई समझौता नहीं किया जाता। ये बुनियादी सिद्धांत हैं:
- राष्ट्रीय आस्था और मूल्य
- राष्ट्रीय हित
- राष्ट्रीय रणनीति
- वैश्विक एजेंडा को आकार देना: भारत के लिये अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में एक 'अग्रणी शक्ति' के रूप भूमिका निभा सकने की संभावनाओं का पता लगाना महत्त्वपूर्ण है, जो कि वैश्विक मानदंडों

और संस्थागत वास्तुकला को आकार दे सके, न कि इन्हें दूसरों द्वारा आकार दिया जाए और भारत बस अनुपालनकर्त्ता हो।

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने की आकांक्षा इसी भूमिका से संबद्ध है, जिसके लिये बड़ी संख्या में देशों ने पहले ही समर्थन देने का वादा कर रखा है।[13,14,15]

➢ विकास के लिये कूटनीति: अपने विकास प्रक्षेपवक्र को बनाए रखने के लिये भारत को पर्याप्त बाह्य आदान/इनपुट की आवश्यकता है।

- मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्मार्ट सिटीज़, अवसंरचना विकास, डिजिटल इंडिया, क्लीन इंडिया जैसे हमारे कार्यक्रमों की सफलता के लिये विदेशी भागीदारों, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, वित्तीय सहायता और प्रौद्योगिकीय हस्तांतरण की आवश्यकता है।

➢ भारत की विदेश नीति को विकास के लिये कूटनीति के इस पहलू पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये जहाँ आर्थिक कूटनीति को राजनीतिक कूटनीति के साथ एकीकृत किया जाए।

विचार-विमर्श

विगत कुछ वर्षों में भारत की विदेश नीति परिवर्तन के दौर से गुज़र रही है। इसी वर्ष दिल्ली में आयोजित रायसीना डायलॉग में भारत के विदेश सचिव ने कहा था कि "भारत गुटनिरपेक्षता के अतीत से बाहर निकल चुका है और आज अपने हितों को देखते हुए दुनिया के अन्य देशों के साथ रिश्ते बना रहा है।" ध्यातव्य है कि वर्तमान में भारत, विश्व के लगभग सभी मंचों पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है और अधिकांश बहुपक्षीय संस्थानों में उसकी स्थिति मज़बूत हो रही है। विशेषज्ञों का मनाना है कि भविष्य में भारत की विदेश नीति इस बात पर निर्भर करेगी कि G20 और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में वह किस प्रकार की भूमिका निभाता है।

कैसे परिभाषित होती है विदेश नीति?

➢ विदेश नीति एक ढाँचा है जिसके भीतर किसी देश की सरकार, बाहरी दुनिया के साथ अपने संबंधों को अलग-अलग स्वरूपों यानी द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और बहुपक्षीय रूप में संचालित करती है।

- वहीं कूटनीति किसी देश की विदेश नीति को प्राप्त करने की दृष्टि से विश्व के अन्य देशों के साथ संबंधों को प्रबंधित करने का एक कौशल है।

➢ किसी भी देश की विदेश नीति का विकास घरेलू राजनीति, अन्य देशों की नीतियों या व्यवहार एवं विशिष्ट भू-राजनीतिक परिदृश्यों से प्रभावित होता है।

- शुरुआत के दिनों में यह माना गया कि विदेश नीति पूर्णतः विदेशी कारकों और भू-राजनीतिक परिदृश्यों से प्रभावित होती है, परंतु बाद में विशेषज्ञों ने यह माना कि विदेश नीति के निर्धारण में घरेलू कारक भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।[16,17,18]

भारत की विदेश नीति: मुख्य उद्देश्य

➢ किसी भी अन्य देश के समान ही भारत की विदेश नीति का मुख्य और प्राथमिक उद्देश्य अपने 'राष्ट्रीय हितों' को सुरक्षित करना है।

➢ उल्लेखनीय है कि सभी देशों के लिये 'राष्ट्रीय हित' का दायरा अलग-अलग होता है। भारत के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय हित के अर्थ में क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिये हमारी सीमाओं को सुरक्षित करना, सीमा-पार आतंकवाद का मुकाबला, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, साइबर सुरक्षा आदि शामिल हैं।

➢ अपनी विकास गति को बढ़ाने के लिये भारत को पर्याप्त विदेशी सहायता की आवश्यकता होगी। विभिन्न परियोजनाओं जैसे- मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्मार्ट सिटीज़, इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, डिजिटल इंडिया, क्लीन इंडिया आदि को सफल बनाने के लिये भारत को विदेशी सहयोगियों, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, वित्तीय सहायता और टेक्नोलॉजी की ज़रूरत है।

- उल्लेखनीय है कि हाल के कुछ वर्षों में भारत की विदेश नीति के इस पहलू पर नीति निर्माताओं ने काफी अधिक ध्यान दिया है।

➢ विश्व भर में भारत का डायस्पोरा भी काफी मज़बूत है और तकरीबन विश्व के सभी देशों में फैला हुआ है। भारत की विदेश नीति का एक अन्य उद्देश्य विदेशों में रह रहे भारतीय को संलग्न कर वहाँ उनकी उपस्थिति का अधिकतम लाभ उठाना है, इसी के साथ उनके हितों को सुरक्षित रखना भी आवश्यक होता है।

➢ संक्षेप में कहा जा सकता है कि भारत की विदेश की मुख्यतः 4 महत्त्वपूर्ण उद्देश्य हैं:

- भारत को पारंपरिक और गैर-पारंपरिक खतरों से बचाना।
- ऐसा वातावरण बनाना जो भारत के समावेशी विकास के लिये अनुकूल हो, जिससे देश में गरीब से-गरीब व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुँच सके।
- यह सुनिश्चित करना की वैश्विक मंचों पर भारत की आवाज़ सुनी जाए और विभिन्न वैश्विक आयामों जैसे- आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, निरस्त्रीकरण और वैश्विक शासन के मुद्दों को भारत प्रभावित कर सके।
- विदेश में भारतीय प्रवासियों को जोड़ना और उनके हितों की रक्षा करना।

भारतीय विदेश नीति के मुलभूत सिद्धांत हैं:

➢ पंचशील सिद्धांत: उल्लेखनीय है कि पंचशील सिद्धांत को सर्वप्रथम वर्ष 1954 में चीन के तिब्बत क्षेत्र तथा भारत के मध्य संधि करने के लिये प्रतिपादित किया गया और बाद में इसका प्रयोग वैश्विक स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को संचालित करने के लिये भी किया गया। पाँच सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

- एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का पारस्परिक सम्मान।
- पारस्परिक आक्रमण न करना।
- परस्पर हस्तक्षेप न करना।
- समता और आपसी लाभ।
- शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।

भारतीय विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ

➢ भारत किसी विशेष देश के विरुद्ध किसी अन्य देश या देशों के समूह द्वारा प्रतिबंध लगाए जाने का समर्थन नहीं करता है जब तक कि ये प्रतिबंध अंतर्राष्ट्रीय सर्वसम्मति के साथ न अधिरोपित किया जाए। ध्यातव्य है कि भारत ऐसे शांति सैन्य अभियानों में ही हिस्सा लेता है जिनमें संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना बल शामिल हों।

➢ भारत अन्य देशों के आतंरिक मामलों में दखलअंदाज़ी करने में विश्वास नहीं रखता, परंतु यदि कोई देश अनजाने में या जानबूझकर भारत के राष्ट्रीय हितों को प्रभावित करता है तो भारत बिना समय बर्बाद किये हस्तक्षेप करने में नहीं झिझकेगा।

➢ भारत आक्रामकता के स्थान पर निर्माणात्मकता पर ज़ोर देता है। भारत का मानना है कि युद्ध समस्या का हल नहीं बल्कि एक नई समस्या की शुरुआत होता है। परंतु धैर्य की नीति को भारत की कमज़ोरी नहीं माना जा सकता।

बदलती भारतीय विदेश नीति

- भारत की वर्तमान विदेश नीति की सबसे खास विशेषता यह है कि इसमें पूर्व की सभी नीतियों की अपेक्षा जोखिम लेने की प्रवृत्ति सबसे अधिक है।
- भारत अपनी दशकों पुरानी सुरक्षात्मक नीति को बदलते हुए कुछ हद तक आक्रामक नीति की ओर अग्रसर हो रहा है।
- डोकलाम में भारत की कार्रवाई और वर्ष 2016 में उरी आतंकी हमलों के बाद पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक भारतीय नीति के प्रमुख उदाहरण हैं।[19,20,21]
- कई जानकारों का मानना है कि भारत की वर्तमान विदेश नीति में विचारों और कार्रवाई की स्पष्टता दिखाई देती है।
- बदलते वैश्विक राजनीतिक परिवेश में भारत अपने आर्थिक और राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिये किसी भी औपचारिक समूह पर निर्भरता को सीमित कर रहा है।
- भारत ने अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाए रखने का एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया है और अमेरिका तथा रूस के साथ भारत के संबंध इस तथ्य के प्रमुख उदाहरण हैं।
- यद्यपि कार्रवाई की स्पष्टता एक स्वागत योग्य कदम है, परंतु जटिल मुद्दों और नीतियों के लिये बारीक और दीर्घकालिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी।
- अमेरिका पर अत्यधिक निर्भरता से भारत की रणनीतिक स्वायत्तता में कमी आ सकती है, अतः आवश्यक है कि संबंधों में संतुलन बनाए रखा जाए।
- विदेश नीति का घरेलू राजनीतिकरण एक चिंता का विषय है। जिसके चलते विदेश नीति का निर्णय लेते समय नेतृत्व को घरेलू कारकों का ध्यान देना पड़ता है और विदेश नीति प्रभावित होती है।

1. परिणाम

शीत युद्ध के बाद, विशेष रूप से 2000 के दशक के बाद से, चीन के तेजी से उदय ने संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) के प्रभाव के लिए एक चुनौती पेश की है। हालाँकि अमेरिका को अभी भी एकमात्र महाशक्ति माना जा सकता है, लेकिन इसकी सापेक्षिक गिरावट स्पष्ट है। एशियाई खिलाड़ी, जैसे कि जापान, आसियान देश और ऑस्ट्रेलिया और भारत, नई परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं और उन्हें अपना रहे हैं, जिसे एशिया में शक्ति परिवर्तन के रूप में नामित किया जा सकता है।

हालाँकि अमेरिका और चीन को एशियाई खिलाड़ियों के बीच वर्तमान और भविष्य की दो प्रमुख शक्तियाँ माना जा सकता है, लेकिन भारत स्पष्ट रूप से उन दो देशों के साथ एक प्रमुख शक्ति के रूप में बराबरी करने की कोशिश कर रहा है, भले ही वह उनसे एक या दो कदम पीछे है।.

इसलिए, इस लेख का मुख्य उद्देश्य यह परीक्षण प्रस्तुत करना है कि भारत वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय स्थिति और उससे आगे अपनी समग्र विदेश नीति का निर्माण कैसे करने का प्रयास कर रहा है। आरंभ में निष्कर्ष बताने के लिए, भारत भविष्य में स्वयं एक प्रमुख शक्ति बनने का लक्ष्य रखकर उभरती स्थिति का जवाब देने का प्रयास कर रहा है। भारत 1947 में अपनी स्वतंत्रता के बाद से 2000 के दशक तक अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच में एक अनिच्छुक खिलाड़ी रहा है। हालाँकि, 2010 के दशक की शुरुआत के साथ, भारत ने खुद को एक गतिशील अभिनेता के रूप में रूपांतरित कर लिया है और एक प्रमुख शक्ति के रूप में अपनी स्थिति को नकारने से लेकर इसकी पुष्टि करने की ओर कदम बढ़ाया है। भारत के परिवर्तन पर साहित्य की कमी के लिए और अधिक परीक्षण की आवश्यकता है। तदनुसार, यह लेख भारत की विदेश नीति का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करने का एक प्रयास है। इस विषय पर शायद ही कोई साहित्य है, और इसलिए यह लेख भारत की विदेश नीति के समग्र दृष्टिकोण को स्पष्ट करने का एक प्रयास है।

इस संदर्भ में, एक प्रमुख शक्ति की परिभाषा को छूने की आवश्यकता हो सकती है। किसी प्रमुख शक्ति की कोई स्थापित परिभाषा नहीं है, लेकिन कुछ विशेषज्ञ भारत के संबंध में उपयोगी सुराग देते हैं। उदाहरण के लिए, पर्कोविच (2003-04) बताते हैं कि 'भारत अन्य महत्वपूर्ण राज्यों से भारतीय मांगों का अनुपालन नहीं करवा सकता... भारत के पास अन्य देशों द्वारा उस पर रखी गई मांगों का विरोध करने की क्षमता है।' दूसरों का तर्क है कि भारत की विदेश नीति का उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को बदलने की क्षमता के मामले में एक प्रमुख शक्ति बनना या एक प्रमुख शक्ति के रूप में माना जाना है (कोंडो, 2012, पृष्ठ 7)। [1]

एशिया में सत्ता परिवर्तन के प्रति भारत की रणनीतिक प्रतिक्रिया और भारत के उद्देश्यों की जांच करते हुए, यह लेख चार खंड प्रस्तुत करता है। पहला खंड द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति और 1990 के दशक के बीच एशिया में व्याप्त स्थिति पर भारत की विदेश नीति की प्रतिक्रियाओं का एक संक्षिप्त ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करता है। इस अवधि की प्रमुख विशेषता भारत की अपनी क्षमताओं की अपर्याप्तता की आत्म-धारणा होगी। यह कहना संभव है कि यह धारणा भारत की गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति और सोवियत संघ के साथ उसके गठबंधन के मूल कारक का प्रतीक है।

दूसरा खंड, जो मुख्य रूप से 2010 को संबोधित करता है, भारत की प्रमुख शक्ति के इरादों के पीछे के रहस्यमय तर्क का विश्लेषण करता है। दूसरे तरीके से कहें तो, यह अवधि भारत की विदेश नीति के कायापलट को पूर्ववर्ती लंबी अवधि की तुलना में विशिष्ट रूप से भिन्न दर्शाती है। इस तरह के अंतर को स्पष्ट करने के लिए, यह अनुभाग भारत की विदेश नीति मैट्रिक्स को दर्शाता है। मैट्रिक्स भारत की विदेश नीति के लक्ष्यों को समझने के लिए एक बुनियादी और समग्र रूपरेखा और धारणा प्रदान करता है।

तीसरे खंड में रूस और जापान के साथ भारत के घनिष्ठ संबंधों पर चर्चा की गई है - जो वर्तमान में भारत के दो प्रमुख भागीदार हैं। लेखक का मानना है कि भारत, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर अपनी विदेश नीतियों को सुचारू रूप से चलाने के लिए, इन दो प्रमुख खिलाड़ियों के साथ तालमेल चाहता है। भूराजनीतिक रूप से कहें तो, भारत यूरेशिया में रूस और हिंद-प्रशांत में जापान के साथ अपने संबंधों के माध्यम से आक्रामक चीन से निपटने का प्रयास कर रहा है। समापन खंड में इस बात पर विचार किया गया है कि भारत अपनी विदेश नीति अभिविन्यास के साथ कैसे आगे बढ़ सकता है।

2. भारत की विदेश नीति का ऐतिहासिक विकास

इस लेख का मुख्य उद्देश्य इस बात की जांच करना है कि अंतर्राष्ट्रीय मंच पर लंबी अवधि की सावधानी के बाद 2010 के मध्य में एक प्रमुख शक्ति बनने की भारत की खोज कैसे मूर्त रूप लेती है। आजादी के बाद पिछले छह दशकों में भारत की विदेश नीति को स्पष्ट करने के माध्यम से, हाल ही में एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरने वाली भारत की विदेश नीति को तीव्र राहत में लाना संभव है।[22,23,24]

2.1. शीत युद्ध के दौरान

भारत, जो ब्रिटिश भारत से विभाजित हुआ और अगस्त 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त की, में एक विशिष्ट प्रमुख शक्ति के कई बुनियादी गुण थे: इसका इतिहास, आकार और स्थान। इसके इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि भारत की एक विशिष्ट विशेषता है: 'महान विश्व सभ्यताओं में से, केवल भारत और चीन ही एक बड़े राष्ट्र-निकाय की राजनीतिक सभ्यता का प्रतीक हैं' (कोहेन, 2001, पृष्ठ 51)। हालाँकि ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत भारत एक संप्रभु राज्य नहीं था, यह 1945 में इसकी स्थापना के समय संयुक्त राष्ट्र (यूएन) का एक मूल

सदस्य बन गया। इस प्रकार, भारत ब्रिटिश भारत के उत्तराधिकारी राज्य के रूप में अपनी स्थिति का दावा करने की स्थिति में है। पाकिस्तान, ब्रिटिश भारत की एक और विभाजित इकाई, सितंबर 1947 में एक नए राज्य के रूप में संयुक्त राष्ट्र में शामिल हुई।

इसके अलावा जनसंख्या और क्षेत्रफल की दृष्टि से भी भारत सबसे बड़े देशों में से एक है। इसका क्षेत्रफल जापान से नौ गुना बड़ा है। इसके अलावा, भारत हिंद महासागर में एक केंद्रीय स्थान रखता है।

फिर भी, इन विशेषताओं ने स्वाभाविक रूप से भारत को प्रमुख शक्ति का दर्जा नहीं दिलाया है, खासकर आर्थिक आकार और रक्षा क्षमता के मामले में इसकी राष्ट्रीय शक्ति की कमी के कारण। राष्ट्रीय शक्ति के अभाव के कारण भारत एक प्रमुख शक्ति बनने का खोखला दिवास्वप्न ही छोड़ गया। यह एक प्रमुख देश था, लेकिन इसका प्रभाव क्षेत्र मूलतः दक्षिण एशियाई क्षेत्र तक ही सीमित था। उन परिस्थितियों को देखते हुए, भारत की विदेश नीति के विकल्प काफी सीमित रहे हैं।

शीतयुद्ध काल के दौरान ऐसी सीमाएँ स्पष्ट रूप से स्पष्ट थीं। सबसे पहले, भारत ने अपने पहले प्रधान मंत्री, जवाहरलाल नेहरू के तहत 1940 और 1960 के दशक के बीच अपनी तथाकथित गुटनिरपेक्ष नीति को अपनी विदेश नीति के मूल सिद्धांत के रूप में स्थापित और बनाए रखा। इस नीति का मतलब न तो अमेरिकी खेमे और न ही सोवियत खेमे के साथ तालमेल बिठाना था। हालाँकि यह सच था, यह परिभाषा गुटनिरपेक्षता के आधे महत्वपूर्ण पहलुओं की व्याख्या करती है। अन्य आधा हिस्सा इंडोनेशिया, यूगोस्लाविया और मिस्र जैसे अन्य गुटनिरपेक्ष देशों के साथ सामान्य कारण खोजने में था, जिसके साथ वह मिलकर काम कर सके।

1970 के दशक की शुरुआत में गुटनिरपेक्षता नीति को ख़त्म कर दिया गया था। हालाँकि, भारत ने आधिकारिक तौर पर इसे अमेरिका और चीन के बीच मेल-मिलाप के युग के दौरान एक सतत नीति के रूप में दावा किया, और जब दिसंबर 1971 में दूसरा भारत-पाकिस्तान युद्ध (जिसे बांग्लादेश स्वतंत्रता युद्ध भी कहा जाता है) आसन्न था। चीन और पाकिस्तान ने एक सर्वव्यापी नीति विकसित की। -1960 के दशक में मौसम संबंध और बाद में इसे बनाए रखा। चूंकि 'हजारों वर्षों से भारत के लिए सैन्य खतरों को मुख्य रूप से भारत के उत्तर-पश्चिम से आने वाला माना जाता रहा है' (ब्रूस्टर, 2012, पृष्ठ 26), पश्चिम में पाकिस्तान और उत्तर में चीन के उभरे संयोजन ने भारत की खतरे की धारणा को और बढ़ा दिया है।

इसके विपरीत, भारत ने 9 अगस्त 1971 को शांति, मित्रता और सहयोग की भारत-सोवियत संधि पर हस्ताक्षर करके अपनी गुटनिरपेक्ष नीति को प्रभावी ढंग से त्याग दिया, जिसमें आपसी रणनीतिक सहयोग निर्दिष्ट था। यदि गठबंधनों को 'विशिष्ट परिस्थितियों में, अपनी सदस्यता के बाहर सैन्य बलों के उपयोग (या गैर-उपयोग) के लिए राज्यों के औपचारिक संघ' के रूप में परिभाषित किया जाना है (स्नाइडर, 1997, पृष्ठ 4), तो संधि [2] के निर्माण का संकेत देती है भारत और सोवियत संघ के बीच द्विपक्षीय संबंध और इन राज्यों को संरेखित किया (होरिमोटो और लालिमा, 2013, पृष्ठ 5-8)।[25,26,27]

इसलिए, *द टाइम्स* (लंदन) ने नोट किया कि: 'भारत ने आज गैर-गठबंधन की अपनी नीति को त्याग दिया और सोवियत संघ के साथ औपचारिक गठबंधन में प्रवेश किया।' [3] हालाँकि, यह उल्लेखनीय है कि भारत-सोवियत संधि पर हस्ताक्षर करने के बाद भी, भारत ने आधिकारिक तौर पर गुटनिरपेक्षता की अपनी विदेश नीति को बरकरार रखा है, जैसा कि समीक्षाधीन अवधि के दौरान विदेश मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट में बताया गया है।

इसलिए, स्वतंत्रता के बाद से, भारत ने अपनी विदेश नीति को गुटनिरपेक्षता से सोवियत संघ के साथ गठबंधन में बदल दिया है। इस परिवर्तन के संबंध में, मैं भारत की विदेश नीति के अध्ययन में विशेषज्ञता रखने वाले जापानी विद्वानों के बीच एक विपरीत दृष्टिकोण पेश करना चाहूंगा। अर्थात्, 'यद्यपि संधि प्रकृति में एक गठबंधन थी, यदि भारत और रूस के द्विपक्षीय संबंध स्वतंत्रता पर आधारित पारस्परिक रूप से भरोसेमंद संबंधों से बने थे, संबंध समान थे, तो तार्किक रूप से कहें तो, संधि तथाकथित शीत नहीं है युद्ध गठबंधन और गुटनिरपेक्ष सिद्धांतों का खंडन नहीं किया' (योशिदा, 2001, पृष्ठ 46)। लेकिन इस लेखक की राय कुछ अलग है। चूँकि उन दिनों, भारत व्यापार और रक्षा अधिग्रहण के लिए रूस पर बहुत अधिक निर्भर था, इसलिए भारत-रूस संबंधों को आसानी से समान नहीं माना जा सकता था।

भारत अपनी नीति बदलने को क्यों मजबूर हुआ? इसका मूल कारण उसकी राष्ट्रीय शक्ति की अपर्याप्तता होगी। गुटनिरपेक्ष देशों का गठबंधन पहला विकल्प था, उसके बाद सोवियत संघ के साथ गठबंधन किया गया। भारत इसे अकेले बर्दाश्त नहीं कर सकता था। भारत विभिन्न संरेखण नीतियों को अपनाने के लिए बाध्य है। [4] भारत की दो विदेश नीतियों का शुद्ध परिणाम अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अप्रभावी उपस्थिति थी। सोवियत संघ के साथ भारत का गठबंधन आम तौर पर इसे मौजूदा अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य में एक आश्रित अभिनेता के रूप में प्रस्तुत करने वाला माना जाता था।

भारत के पूर्वी एशियाई विशेषज्ञ पैन मूर्ति ने भारत को द्विध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में एक मध्यवर्ती शक्ति के रूप में माना है, जिसे 'अपने आप में एक कोने या ध्रुव के रूप में नहीं माना जा सकता है (मूर्ति, 1986, पृष्ठ 391)।

2.2. 1990 के दशक के शीत युद्ध के बाद की अवधि में: विभिन्न नई विदेश नीति पहल

1990 के दशक में प्रवेश करते हुए, भारत को एक कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ा। अन्य बातों के अलावा, सोवियत संघ के पतन का मतलब था कि भारत ने अपनी विदेश नीति का मुख्य आधार खो दिया था। भारत के पास विभिन्न नई नीतियों को शुरू करने के लिए टटोलने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। इसने भारत के लिए कठिन चुनौतियाँ प्रस्तुत कीं क्योंकि 'भारत ने आम तौर पर खुद को एक विश्व शक्ति के रूप में देखा है, और इसी आधार पर अपने क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का संचालन किया है। इसका परिणाम विदेश में महत्वहीनता, क्षेत्र में संदेह और घर में अशांति है' (ठाकुर, 1992)।

इसके अलावा, सोवियत संघ न केवल भारत का प्रमुख भागीदार था, बल्कि उसका प्रमुख व्यापारिक भागीदार भी था। 1990-91 के खाड़ी युद्ध, तेल की कीमतों में बढ़ोतरी और मध्य पूर्व में विदेशों में रहने वाले भारतीयों द्वारा घरेलू प्रेषण में भारी कमी के कारण, भारत को अपने ऋणों पर चूक की संभावना का सामना करना पड़ा। इसके पास आईएमएफ ऋण से सहायता लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। उस सहायता के बदले में, भारत को अपनी आर्थिक प्रणाली को विनियमित करने और शीत युद्ध काल के दौरान बनाए गए बंद दृष्टिकोण से अपनी अर्थव्यवस्था को खोलने की आवश्यकता थी। जून 1991 में नरसिम्हा राव प्रधान मंत्री बने और अगले महीने वित्त मंत्री मनमोहन सिंह (बाद में प्रधान मंत्री) के साथ मिलकर आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत की।

भारतीय अर्थव्यवस्था के परिवर्तन और सोवियत संघ के पतन के साथ-साथ बदली हुई अंतर्राष्ट्रीय संरचना ने भारत को अपनी विदेश नीति में पूरी तरह से बदलाव करने के लिए मजबूर किया है। 1990 के दशक में कई विदेश नीति पहल शुरू की गईं। 1992 में राव ने अमेरिका का दौरा किया। भारत के लिए, शीत युद्ध के दौरान अमेरिका 'कभी-कभी मित्रतापूर्ण, कभी-कभी शत्रुतापूर्ण, लेकिन, अधिकतर, बस अलग-थलग हो जाता था' (कुक्स, 1993, पृष्ठ 447)। वह टिप्पणी शायद अतिशयोक्ति नहीं होगी। आख़िरकार, भारत की विदेश नीति ने पिछली आधी सदी के

दौरान अमेरिका के प्रति अपनी नीति को प्रतिबिंबित किया है।[28,29,30]

राव ने 1993 में चीन का दौरा किया और भारत और चीन के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखाओं के संबंध में शांति और शांति बनाए रखने पर एक समझौता किया। समझौते का सार उनकी आपसी सीमा के जटिल मुद्दे को सुलझाकर रिश्ते को सामान्य बनाने के रूप में समझा जा सकता है (होरिमोटो, 2014बी)। लुक-ईस्ट नीति का पालन 1993 से किया जा रहा है (हैदर, 2012, पृष्ठ 53)। इस नई दिशा के परिणामस्वरूप भारत को 1994 में आसियान के डायलॉग पार्टनर का दर्जा प्राप्त हुआ और अगले वर्ष वह एआरएफ का सदस्य बन गया। स्थिति में यह बदलाव आसियान की धारणा में बदलाव के कारण हुआ, जिससे वह 'चीन के उदय के निहितार्थों को पचाने में सक्षम हो गया, न केवल एक आर्थिक शक्ति के रूप में बल्कि एक सैन्य शक्ति के रूप में भी' (नायडू, 2013, पृष्ठ 63)।[21,22,,23]

1990 के दशक के उत्तरार्ध के दौरान, भारत ने 1997 में दक्षिण अफ्रीका के साथ अपनी पहली रणनीतिक साझेदारी स्थापित की। रणनीतिक साझेदारी बनाना भारत की विदेश नीति के स्तंभों में से एक के रूप में स्थापित हो गया (होरिमोटो, 2012)। 2015 तक, भारत ने 28 देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी बनाए रखी है। 1990 के दशक के अंत में, भारत ने 1974 के बाद दूसरी बार 1998 में परमाणु बम परीक्षण किया। इन परीक्षणों की दुनिया भर में कड़ी निंदा की गई, लेकिन एक प्रमुख शक्ति के रूप में भारत की छवि को ऊपर उठाने में मदद मिली।

इन सभी नीतिगत पहलों ने दुनिया को भारत की एक नई छवि से प्रभावित किया, लेकिन वे भारत की विदेश नीति के किसी नए उद्देश्य के स्पष्ट संकेत के बिना विविध पहल थीं। स्वाभाविक रूप से, भारत की विदेश नीति ने विभिन्न आलोचनाओं को आमंत्रित किया: 'भले ही अंतरराज्यीय वैश्विक पदानुक्रम में भारत की वृद्धि लगातार जारी है, इसके नीति निर्माता अभी भी अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं जैसे कि भारत मामले-दर-मामले विदेश नीति चुनौतियों का जवाब देने की सुविधा जारी रख सकता है। -मामले के आधार पर दीर्घकालिक रणनीतिक नीति ढांचे की कोई आवश्यकता नहीं है। वही तदर्थ-वाद जिसने अतीत में भारतीय विदेश नीति की विशेषता बताई थी, आज भी कायम है' (पंत, 2009)। इसी तरह, राजीव सीकरी (विदेश मंत्रालय के पूर्व विदेश सचिव) ने कहा, 'भारत के पास एक स्पष्ट भव्य रणनीतिक डिजाइन होना चाहिए' (सीकरी, 2009, पृष्ठ 300)।

3. भारत की प्रमुख शक्ति का दर्जा प्राप्त करने की आकांक्षा

3.1. भारत का उद्भव

ये आलोचनात्मक टिप्पणियाँ 1990 और 2000 के दो दशकों में भारत की विदेश नीति की ओर निर्देशित हो सकती हैं। 1990 के दशक के भारत के लिए ये सही आकलन हो सकते हैं, लेकिन 2000 के बाद का भारत पूरी तरह से बदली हुई तस्वीर पेश करता है। 2000 के दशक में प्रवेश करने पर, भारत का एक प्रमुख शक्ति बनने की प्रवृत्ति धीरे-धीरे उभरी। कोई कह सकता है कि 1998 इस इरादे का गुप्त प्रारंभिक बिंदु था, लेकिन 2001 में BRIC शब्द के लोकप्रिय उपयोग में आने तक भारत की परमाणु उपलब्धियाँ एक सपना साबित हुईं। BRICs [5] को गोल्डमैन के तत्कालीन अध्यक्ष द्वारा जनता के सामने पेश किया गया था सैक्स एसेट मैनेजमेंट, जिम ओ'नील, अपने प्रकाशन *बिल्डिंग बेटर ग्लोबल इकोनॉमिक ब्रिक्स* (ओ'नील, 2001) में। ब्रिक्स ब्राजील, रूस, भारत और चीन के समूह को दर्शाता है, जो सभी उभरती अर्थव्यवस्थाओं की अपनी उज्ज्वल संभावनाओं को साझा करते हैं। भारत इन भविष्यवाणियों पर खरा उतरा। इसने वित्तीय वर्ष 2003 और 2010 के बीच 8-10 प्रतिशत की उच्च आर्थिक विकास दर दिखाई (इशिगामी, 2017, पृष्ठ 52)।

ऐसे अद्भुत आर्थिक प्रदर्शन ने भारत को बहुत आत्मविश्वास दिया है। तत्कालीन सत्तारूढ़ दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने 2004 के आम चुनाव घोषणापत्र में 'शाइनिंग इंडिया' का नारा पेश किया था। भारत के प्रमुख रणनीतिक विचारक सी. राजा मोहन ने कहा है: 'दशकों तक खुद को निराश करने के बाद, भारत अब एक महान शक्ति बनने की कगार पर है' (मोहन, 2006)। भारत के उभरने की गति 2010 के दशक तक जारी रही। जब भारत ने दिसंबर 2011 में मध्यम दूरी की मिसाइल अग्नि लॉन्च की, तो चाइना डेली ने भारत की महान शक्ति महत्वाकांक्षाओं पर टिप्पणी की। 6 *द इकोनॉमिस्ट ने 2013 में भारत को एक महान शक्ति* शीर्षक से एक विशेष अंक प्रकाशित किया । [7]

परिणामस्वरूप, 2000 और 2010 के दशक में भारत वैश्विक मंच पर उभरता हुआ दिख रहा था। फिर भी, भारत सरकार (जीओआई) ने कभी भी सार्वजनिक रूप से देश को एक प्रमुख शक्ति घोषित नहीं किया है और इसके बजाय समान विचारधारा वाले देशों के साथ सहयोग या गठबंधन की अपनी पारंपरिक विदेश नीति का पालन किया है। भारत सरकार द्वारा सार्वजनिक किया गया पहला दस्तावेज़ *राष्ट्रीय सुरक्षा पर जीओएम की रिपोर्ट* थी, जो बताती है कि भारत के पास अमेरिका के साथ घनिष्ठ संबंधों को चुनने के अलावा कोई उचित विकल्प नहीं है (मंत्रियों का समूह, 2001)।

दूसरा दस्तावेज़ *द चैलेंज: इंडिया एंड द न्यू अमेरिकन ग्लोबल स्ट्रैटेजी*, 2006 था, जिसे के. सुब्रमण्यम की अध्यक्षता वाली टास्क फोर्स द्वारा प्रधान मंत्री सिंह को प्रस्तुत किया गया था, जिन्हें स्वतंत्र भारत में सबसे बड़ा रणनीतिक विचारक माना जाता था। हालाँकि यह दस्तावेज़ गुप्त है, संजय बारू ने इसके सार का खुलासा करते हुए कहा कि 'समय आ गया है कि भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ अधिक एकीकरण के माध्यम से अपने हितों को आगे बढ़ाए, विकसित अर्थव्यवस्थाओं, विशेष रूप से अमेरिका द्वारा प्रदान किए गए आर्थिक अवसरों का सर्वोत्तम उपयोग करे।' बारू, 2014, पी. 168). इसका स्वर लगभग 2001 की रिपोर्ट जैसा ही है।

निश्चित रूप से, और विशेष रूप से विदेशियों के लिए, ये दस्तावेज़ भारत की वर्तमान विदेश नीति को स्पष्ट करने वाली उत्कृष्ट सामग्री और डेटा प्रदान करते हैं। इन दोनों के अलावा, 2000 के दशक से, भारत की विदेश नीति को एक विविध, बहुपक्षीय नीति के रूप में चित्रित करने के लिए विभिन्न तर्क सामने रखे गए हैं। हालाँकि, वे अधूरे रह जाते हैं, विदेश नीति की संपूर्ण तस्वीर, विशेष रूप से इसकी विदेश नीति के मुख्य उद्देश्यों को प्रदान करने में विफल रहते हैं। शायद, भारत को संक्रमण काल के दौरान उचित कदम उठाने में कठिनाई हुई होगी क्योंकि भारत का एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरना एक हालिया घटना है।

3.2. प्रमुख शक्ति और ताओगुआंग यांगहुई का निषेध

हालाँकि भारत को आम तौर पर भविष्य की प्रमुख शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है, लेकिन एक दिलचस्प और अजीब घटना सामने आई: भारत द्वारा ऐसी स्थिति और भूमिका को नकारना। शायद कोई ऐसी ही प्रवृत्ति 2012 में रिपोर्ट *नॉनएलाइनमेंट2.0* (खिलनानी *एट अल.*, 2012) में पा सकता है, जिसे एक अर्ध-आधिकारिक दस्तावेज़ माना गया है। इसमें, अगले दशक में भारत की विदेश और रणनीतिक नीति को निर्देशित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले बुनियादी सिद्धांतों की पहचान की जा सकती है। रिपोर्ट भारत को एक प्रमुख शक्ति के रूप में संदर्भित करती है, लेकिन इस स्थिति से सावधान है, बल्कि यह सुझाव देती है कि देश को *रणनीतिक स्वायत्तता* की स्थिति बनाए रखनी चाहिए । इसके बाद, रिपोर्ट की विशेष रूप से भारत में *रणनीतिक समुदाय से कड़ी आलोचना हुई।* [8] इसके मुख्य तर्क को रणनीतिक स्वायत्तता और इसे साकार करने के साधनों पर जोर देने के रूप में संक्षेपित किया जा सकता है (खिलनानी *एट अल*, 2012)

मिलर ने भारत की सतर्कता की ओर इशारा किया है, जिन्होंने देखा कि भारत के राजनयिक अभिजात वर्ग अपने ही देश के उत्थान का विरोध करते हैं (मिलर, 2013)। इसी तरह, भारत के पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एमके नारायणन ने भारत को एक *अनिच्छुक शक्ति* के रूप में चित्रित किया है (नारायणन, 2014)। इसके अलावा, भारत को स्विंग-स्टेट नीतियों (क्लिमन और फॉन्टेन, 2012) का उपयोग करने वाले देश के रूप में जाना जाता है।

ऐसी सावधानी की व्याख्या भारत की रणनीतिक रूप से रक्षात्मक मुद्रा की ऐतिहासिक प्रवृत्ति से की जा सकती है (तनहम, 1992, पृ. 52-53)। स्वतंत्रता के बाद भारत की रक्षा नीति में *रणनीतिक संयम* अवधारणा के अनुप्रयोग को समझाने के लिए एक समान विश्लेषणात्मक प्रयास किया गया है, जो कोई स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं दिखाता है (कोहेन और दासगुप्ता, 2010)।[23,24,25]

ऐसा प्रतीत होता है कि भारत ने अपनी शक्ति को मजबूत करते हुए अपने समय का इंतजार करने की आ ला ताओगुआंग यांगहुई () को अपना लिया है । यह डेंग जियाओपिंग द्वारा प्रतिपादित और हू जिंताओ द्वारा देखी गई चीन की विदेश नीति का आधार रहा है, लेकिन वर्तमान में शी जिनपिंग द्वारा नहीं। यह दृष्टिकोण अब केवल अमेरिका द्वारा अपनाया गया है। [9] संक्षेप में, भारत एक प्रमुख शक्ति बनने की आकांक्षा रखता है, लेकिन वह अपने वास्तविक उद्देश्य को छिपाता रहता है। यदि भारत एक प्रमुख शक्ति बनने की अपनी आकांक्षा रखता है, तो उसे प्रतिकूल परिस्थितियों और प्रतिक्रियाओं का सामना करना पड़ सकता है। ऐसा लग रहा था कि भारत ने तत्कालीन परिस्थितियों में अपने ताओगुआंग यांगहुई को अपना लिया है।

इससे अन्य उभरती शक्तियों के साथ तुलना करना मुश्किल हो जाता है। जिस भू-राजनीतिक स्थिति ने शीत युद्ध के दौरान भारतीय रणनीतिक सोच को प्रेरित किया, वह प्रकृति में *अद्वितीय* है। उदाहरण के लिए, चीन ने देंग जियाओपिंग के सिद्धांतों को अपनाया, जापान ने अपने संसाधन जुटाए, और एक आर्थिक शक्ति बनने और योशिदा सिद्धांत के तहत महान शक्ति का दर्जा हासिल करने की कोशिश की। हालाँकि, भारतीय आर्थिक नीतियों और सुरक्षा हितों में कई विसंगतियाँ बनी रहीं जिसके कारण उसे संकट के अलग-अलग समय में अमेरिका और सोवियत संघ दोनों से मदद लेने के लिए मजबूर होना पड़ा।

3.3. भारत एक अग्रणी शक्ति के रूप में

अब, अप्रैल से मई 2014 में आम चुनाव के परिणामस्वरूप भाजपा के सत्ता में आने के बाद से भारत की विदेश नीति में बदलाव को देखा जा सकता है। भाजपा ने सहयोगी दलों के साथ लोकसभा (निचले सदन) की 543 सीटों में से 282 सीटें जीतीं। पार्टियाँ 54 सीटें और जीत रही हैं। नरेंद्र मोदी ने मई में प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी. भाजपा एक दक्षिणपंथी पार्टी है जिसका मूल संगठन एक हिंदू राष्ट्रवादी संगठन है: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (राष्ट्रीय स्वयंसेवक/देशभक्त संगठन)। भारत में 1989 के आम चुनाव के बाद पहली बार भाजपा को अकेले संसदीय बहुमत मिला है।

श्रेष्ठ भारत (महान भारत) और उच्च आर्थिक विकास के अपने चुनावी नारे के साथ, भाजपा ने भारत को एक समृद्ध और मजबूत राष्ट्र बनाने की योजना पेश करके लोगों की कल्पना पर कब्जा करने की कोशिश की है। पार्टी के अंदरूनी संघर्ष के बाद चुनाव घोषणा पत्र मोदी के पक्ष में तय हुआ। महान भारत का नारा भारतीय लोगों को खुश महसूस करने के लिए प्रेरित करने का एक प्रभावी साधन था, जो घरेलू राजनीतिक लामबंदी के मामले में सबसे अच्छा साधन था।

मोदी तथाकथित मोदी लहर के साथ लोकप्रिय बहुमत लेकर आए हैं। वह वास्तव में सरकार के शीर्ष पर हैं। इसके अलावा, प्रधान मंत्री के रूप में उनका दृष्टिकोण भारतीय राजनयिक इतिहास में अभूतपूर्व है। वह भाजपा प्रधान मंत्री वाजपेयी सहित अपने सभी पूर्ववर्तियों के विपरीत, तथाकथित *नेहरू कूटनीति के अनुयायी नहीं हैं।*[10] मोदी पहले गृह मंत्री और बाद में उप प्रधान मंत्री (अगस्त 1947 से दिसंबर 1950) सरदार पटेल के पूर्ण अनुयायी हैं। जहाँ नेहरू एक आदर्शवादी, व्यावहारिक और यथार्थवादी थे, वहीं पटेल पूरी तरह यथार्थवादी और व्यावहारिक थे। [11]

मोदी की विदेश नीति की दिशा 18 अक्टूबर 2013 को चुनाव अभियान के दौरान चेन्नई में उनकी टिप्पणी में प्रारंभिक चरण में स्पष्ट थी: 'भारत की विदेश नीति हमारी संस्कृति, परंपरा, ताकत, अर्थव्यवस्था, व्यापार, रणनीति और सुरक्षा की नींव पर बनाई जानी चाहिए। ' प्रधान मंत्री बनने के बाद, मोदी ने फरवरी 2015 में भारतीय मिशनों के प्रमुखों की बैठक में अपनी विदेश नीति अभिविन्यास के सार पर जोर दिया। उन्होंने उनसे आग्रह किया कि वे केवल संतुलन बनाने के बजाय भारत को *अग्रणी भूमिका* में लाने में मदद करने के लिए वर्तमान अद्वितीय अवसर का उपयोग करें। विश्व स्तर पर बल [12] (जोर जोड़ा गया)। भारतीय लोगों को आम तौर पर मोदी की घोषणा पर आश्चर्य नहीं हुआ है, जिसे वे भाजपा के चुनाव घोषणापत्र का स्वाभाविक परिणाम मानते हैं।

हालाँकि, जब विदेश सचिव सुब्रह्मण्यम जयशंकर (के. सुब्रह्मण्यम के दूसरे बेटे), जिन्हें मोदी ने इस पद पर नियुक्त किया था, ने 20 जुलाई 2015 को अपने आईआईएसएस-फुलर्टन व्याख्यान (सिंगापुर) में घोषणा की: भारत की विदेश नीति का आयाम 'आकांक्षा करना' है केवल एक संतुलन शक्ति के बजाय *एक अग्रणी शक्ति* बनें'13 (जोर दिया गया), उनके भाषण में पहली बार एक उच्च पदस्थ भारतीय अधिकारी ने इस तरह का इरादा सार्वजनिक किया था [हालाँकि, एक अग्रणी भूमिका निभाने और एक अग्रणी शक्ति होने के बीच एक बड़ा अंतर मौजूद है: पूर्व अमूर्त है, लेकिन बाद वाला अपने निहितार्थ के संदर्भ में ठोस है। हालाँकि उनके भाषण की चर्चा भारत के कई राष्ट्रीय समाचार पत्रों में हुई, लेकिन जाहिर तौर पर इसके महत्व पर स्पष्ट रूप से ध्यान नहीं दिया गया। [14] भारत के अघोषित ताओगुआंग यांगहुई को अलग कर दिया गया।

इसलिए, भारत ने स्वतः ही अपने ऊपर थोपे गए बाहरी रुख को सीमित करने की सीमा पार कर ली है: एक प्रमुख शक्ति बनने की अपनी आकांक्षा को नकारने से लेकर पुष्टि तक। रुख में यह बदलाव भारत के पहले गैर-नेहरूवादी प्रधानमंत्री मोदी के कारण हो सकता है।

3.4. भारत की विदेश नीति मैट्रिक्स

जैसा कि पहले बताया गया है, भारत के पास विभिन्न परिमाणों की बुनियादी विशेषताएं और एक प्रमुख शक्ति के रूप में स्थिति के लिए पर्याप्त भू-राजनीतिक स्थिति है। शीत युद्ध काल के दौरान, अर्थव्यवस्था और रक्षा के मामले में भारत की राष्ट्रीय शक्ति कमजोर थी। इसलिए, यह केवल एक दिवास्वप्न ही प्रतीत होता है कि भारत किसी दिन एक प्रमुख शक्ति बन सकता है। 2016 की विश्व रैंकिंग में, भारत अब राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद के मामले में सातवें स्थान पर है (जापान तीसरे स्थान पर है) [15वें] और रक्षा व्यय के मामले में पांचवें स्थान पर है (जापान आठवें स्थान पर है)। [16]

इस समय अमेरिका सबसे बड़ी और एकमात्र प्रमुख शक्ति है। चीन भी इसका पीछा करता है, जैसा कि भारत भी करता है, हालांकि वह चीन से एक या दो लंबाई पीछे है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत जैसा कोई अन्य उभरता हुआ देश एक प्रमुख शक्ति बनने का लक्ष्य नहीं रखता है। वास्तव में, अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया परिषद ने 2012 में ही भविष्यवाणी कर दी थी कि: '2030 में भारत एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति हो सकता है जैसा कि आज चीन देखा जाता है। चीन की वर्तमान आर्थिक विकास दर - 8-10% - संभवतः 2030 तक एक दूर की स्मृति बन जाएगी' (राष्ट्रीय खुफिया परिषद, 2012, पृष्ठ 36)। [17]

फिर भी, वास्तव में, विदेशी पर्यवेक्षकों और विद्वानों के लिए, भारत की विदेश नीति के सार को समझना बेहद कठिन रहा है क्योंकि भारत अपनी नीतियों को परिस्थितियों और समय के आधार पर लागू करता है। भारत कभी अमेरिका और जापान पर झुक जाता है तो कभी चीन

और रूस से दोस्ती कर लेता है। इस तरह की विदेशी मुद्राएं बाहरी लोगों को लगातार हैरान करती रही हैं।

भारत की विदेश नीति की उलझन को हल करने के लिए और भारत अपनी विदेश नीति के उद्देश्य को कैसे प्राप्त करने का प्रयास करता है, मैंने भारत की विदेश नीति मैट्रिक्स (मंडला) तैयार की है जैसा कि नीचे दिखाया गया है। मैट्रिक्स का उद्देश्य समकालीन भारत की विदेश नीति की समग्र रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयास करना है। हालाँकि भारत की विदेश नीति पर घरेलू और विदेशी दोनों तरह के कई विद्वानों और अभ्यासकर्ताओं द्वारा किए गए विशाल कार्य मौजूद हैं, वे लगभग समान रूप से व्यक्तिगत मामले के अध्ययन से संबंधित हैं। कई संकलन भारतीय विदेश नीति के सैद्धांतिक विश्लेषण और द्विपक्षीय संदर्भ में अलग-अलग देशों के प्रति इसके दृष्टिकोण को जोड़ते हैं। [18]

मैट्रिक्स भारत की विदेश नीति में गहराई से उतरने और एक भव्य दृष्टिकोण प्रदान करने का एक अस्थायी प्रयास है। 2000 के दशक के बाद से भारत कमोबेश क्षेत्रों के आधार पर विभिन्न विदेशी नीतियों को लागू कर रहा है। 2010 के मध्य में विदेश नीति कार्यान्वयन की ऐसी प्रवृत्तियाँ विशिष्ट हो गई हैं।

मैट्रिक्स में कई विशेषताएं हैं. सबसे पहले, यह स्तरों के तीन स्तरों का गठन करता है: वैश्विक स्तर, क्षेत्रीय (इंडो-पैसिफिक क्षेत्र) स्तर, और स्थानीय (दक्षिण एशिया क्षेत्र) स्तर। प्रत्येक स्तर पर संबंधित मापों के साथ विशिष्ट और अलग-अलग उद्देश्य होते हैं।

तीन स्तरों पर भारतीय दृष्टिकोण में विसंगतियां बाहरी लोगों को उलझन में डालती हैं, क्योंकि भारत हमेशा अपने विविध हितों को प्राप्त करने के लिए प्रमुख शक्तियों से 'खेलता' दिखाई देता है। शायद ऐसे विभिन्न भेदभाव बाहरी लोगों को गुटनिरपेक्ष नीति और सोवियत संघ के साथ गठबंधन के विपरीत, भारत की विदेश नीति के उद्देश्यों और सामग्री पर आश्चर्यचकित करते हैं। जापान के समाचार पत्र भारत की विदेश नीति को सर्वव्यापी, [19] अत्यधिक सतही दृष्टिकोण बताते हैं । यहां तक कि भारतीय विशेषज्ञों ने भी अपने देश की विदेश नीति का संरचनात्मक विश्लेषण नहीं किया है।

दूसरा, समय क्रम के दृष्टिकोण से, वैश्विक स्तर पर वर्तमान और भविष्य के उद्देश्य मूल रूप से भविष्य की आकांक्षाएं हैं जिन्हें हासिल किया जाना है, खासकर अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था निर्माण क्षमता के मामले में। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद, विजयी राष्ट्र के रूप में अमेरिका ने, अपनी अतुलनीय राष्ट्रीय शक्ति - वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का आधा और असाधारण सैन्य क्षमताओं - के साथ संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और जैसे राजनीतिक और आर्थिक संस्थानों की स्थापना का नेतृत्व किया। आईएमएफ. भारत के लिए, क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर के वर्तमान और भविष्य के उद्देश्य वर्तमान और उससे आगे के वैश्विक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं।[25,26,27]

अब प्रत्येक स्तर की रूपरेखा समझायी जायेगी। वैश्विक स्तर भारत का समग्र लक्ष्य है। उस लक्ष्य तक पहुंचने की प्रक्रिया सबसे पहले अंतरराष्ट्रीय प्रणाली का बहु-ध्रुवीकरण स्थापित करना होगा और संभवतः आने वाले वर्षों में अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में एक ध्रुव के रूप में अपनी स्थिति हासिल करना होगा।

अगला, भारत का प्रमुख और अंतिम उद्देश्य - और चीन का भी - अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था निर्माण की क्षमता हासिल करना है। फिलहाल, चीन वन बेल्ट, वन रोड इनिशिएटिव (बीआर इनिशिएटिव) और अन्य संबंधित उपायों के साथ एशियन इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक (एआईआईबी) की नींव के माध्यम से खुद को समान क्षमताओं से लैस करके अमेरिका का अनुकरण करने का प्रयास कर रहा है। चीन की तरह भारत भी भविष्य में ऐसी क्षमताएं हासिल करने का सपना देखता है। संक्षेप में, दोनों देशों की आकांक्षाएं अतीत की तरह नियमों का पालन करने के बजाय नियम-निर्माता बनने की हैं। अब चीन धीरे-धीरे ऐसी क्षमता हासिल करता दिख रहा है, जबकि भारत पिछड़ रहा है। हालाँकि, ऐसी क्षमताएँ प्राप्त करने के बाद, चीन और भारत की नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था जो बनाना चाहती है वह अपारदर्शी है।

इन उद्देश्यों को साकार करने के लिए, भारत अमेरिका और अन्य संबद्ध देशों *की तुलना में* चीन और रूस के साथ सहयोग करता है। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) और ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भारत की पूर्ण सदस्यता वैश्विक स्तर पर रूस और चीन के साथ उसके सहयोग को दर्शाती है। यदि कोई चीन, रूस और भारत को संशोधनवादी शक्तियाँ मानता है, तो अमेरिका और उससे जुड़े देशों को यथास्थितिवादी शक्तियाँ कहा जा *सकता है* । भारत के लिए, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सदस्यता और अन्य उपाय उसके पहले प्रमुख हथकंडों में से एक होंगे।

क्षेत्रीय स्तर (इंडो-पैसिफिक क्षेत्र) पर, भारत एक प्रमुख स्थान हासिल करने और चीन का सामना करते हुए अमेरिका, जापान और अन्य समान विचारधारा वाले देशों के साथ हाथ मिलाकर अपनी सापेक्ष उपस्थिति प्रदर्शित करने का प्रयास कर रहा है। जापान के दक्षिण एशियाई सुरक्षा विशेषज्ञों में से एक ने बताया, 'यह स्वाभाविक है कि जापान भारत-जापान-अमेरिका त्रिपक्षीय सहयोग के साथ मिलकर भारत-जापान सहयोग को डिजाइन करता है' (इज़ुयामा, 2013, पृष्ठ 195)। ऐसा कहा जाता है कि जापान-भारत सुरक्षा संबंधों को समुद्री सहयोग के क्षेत्र में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है (कियोटा, 2016, पीपी. 175-191)। अधिक विशेष रूप से, दोनों नौसेनाओं की अंतरसंचालनीयता का निर्माण और भारत-प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता को बनाए रखना अपरिहार्य बताया गया है (नागाओ, 2017, पृष्ठ 71)।

स्थानीय स्तर (दक्षिण एशिया) पर, भारत अपनी प्रमुख स्थिति को मजबूत करने में *वास्तव में* एक प्रमुख शक्ति बन गया है। यह चीन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित मामलों में अमेरिका और अन्य के साथ सहयोग करने में संकोच नहीं करता है, लेकिन यह मूल रूप से स्वतंत्र रूप से कार्य करना पसंद करेगा, विशेष रूप से हिंद महासागर में (जैन और होरिमोटो, 2016, पीपी। 26-42)।

भारत के लिए, क्षेत्रीय और स्थानीय स्तरों पर विदेश नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति से उसके अंतिम वैश्विक उद्देश्यों को मजबूत करने में मदद मिलेगी जो प्रकृति में अधिक दीर्घकालिक हैं। भारत की अग्रणी शक्ति आकांक्षाएं एशिया के अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के भविष्य के विन्यास पर 'लहर-प्रभाव' पैदा करेंगी।

इस प्रकार, भारत की विदेश नीति न तो सर्वदिशात्मक है और न ही दोहरा व्यवहार वाली है। आने वाले एक या दो दशकों में यह बताना संभव है कि उद्देश्यों और उपायों में बदलाव के साथ-साथ मैट्रिक्स अपने वर्तमान तीन स्तरों को दो स्तरों में बदल सकता है।

अंततः भविष्य की अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की विशेषताएं एशिया की प्रमुख शक्तियों और उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के बीच संबंधों पर आधारित होने की उम्मीद है।

4. भारत की विदेश नीति कार्यशील: रूस और जापान के साथ इसके संबंधों के निहितार्थ

फिलहाल भारत के दो सबसे करीबी साझेदार रूस और जापान हैं। भारत के लिए, मैट्रिक्स के दृष्टिकोण से, रूस के साथ उसके संबंधों का मुख्य *कारण* वैश्विक स्तर पर मौजूद है जबकि जापान क्षेत्रीय स्तर पर काम करता है। हो सकता है कि रूस और जापान के लिए भारत की आकांक्षा एक बड़ी शक्ति में तब्दील होने की दिख रही हो. भ्रामक और मायावी धारणाओं की पृष्ठभूमि में उभरते और मुखर चीन से निपटने और चीन के प्रति अमेरिकी नीति के कार्यान्वयन के संदर्भ में इसका ठोसकरण स्वागतयोग्य होगा, खासकर ट्रम्प प्रशासन के तहत।

4.1. रूस के साथ साझेदारी

भारत के साथ रूसी संबंधों के संबंध में, कई कारक उनके घनिष्ठ संबंधों को रेखांकित करते हैं। भारत ने 1970 और 1980 के दशक के दौरान सोवियत संघ के साथ अपने घनिष्ठ संबंध बनाए रखे। संघ के रूस और कई स्वतंत्र गणराज्यों में स्थानांतरित होने के बाद भी, भारत ने 2000 में रूस के साथ अपनी रणनीतिक साझेदारी स्थापित की, इससे पहले केवल दक्षिण अफ्रीका (1997) और फ्रांस (1998) थे। भारत और रूस ने 2000 से द्विपक्षीय वार्षिक शिखर सम्मेलन आयोजित किया है। उस समय, रूस एकमात्र देश था जिसके साथ भारत नियमित शिखर सम्मेलन आयोजित करता था। वे आज भी जारी हैं। उल्लेखनीय है कि जब जापान में भारत की विदेश नीति पर चर्चा होती है तो रूसी मामले चर्चा से बाहर हो जाते हैं।

1990 के दशक से वैश्विक स्तर पर भारत कभी भी लघु-पार्श्व 20 अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का सदस्य नहीं रहा है । भारत ने 2003 में ऐसी प्रथाओं को समाप्त कर दिया जब आईबीएसए डायलॉग फोरम की स्थापना की गई, जिसमें भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका शामिल थे। वास्तव में, इसकी पहली बैठक के दौरान, वे संयुक्त राष्ट्र, विशेषकर सुरक्षा परिषद में सुधार की तत्काल आवश्यकता पर सहमत हुए। इन तीन देशों में समान विशेषताएं हैं: लोकतांत्रिक देश और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के भविष्य के स्थायी सदस्य बनने के लिए अग्रणी उम्मीदवार।

भारत ब्राज़ील, रूस, भारत और चीन (ब्रिक्स) शिखर सम्मेलन की एक और लघु-पार्श्व बैठक में शामिल हुआ, जिसे 2009 में स्थापित किया गया था। 2011 में दक्षिण अफ्रीका के शामिल होने पर शिखर सम्मेलन को ब्रिक्स शिखर सम्मेलन का नाम दिया गया था। शिखर सम्मेलन मुख्य रूप से संबोधित करता है वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में सुधार और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों में सुधार। यह उल्लेखनीय है कि तीन आईबीएसए देशों को चीन की प्रबलता (चीन-रूस संयोजन की भी) की जांच करने के लिए बड़े समूह (ब्रिक्स शिखर सम्मेलन) के भीतर एक समूह के रूप में चित्रित किया जा सकता है।

यदि शिखर सम्मेलन भारत के लिए अपने पत्ते अच्छी तरह से खेलने का पहला मौका दर्शाता है, तो दूसरा मामला एससीओ में सदस्यता का था, जिसे यूरेशियाई राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य संगठन के रूप में जाना जाता है। भारत ने 2005 से पर्यवेक्षक का दर्जा बरकरार रखा है, जो गुटनिरपेक्ष आंदोलन (एनएएम) के शिखर सम्मेलन में अमेरिकी उपस्थिति को दर्शाता है। भारत ने पाकिस्तान के साथ मिलकर 2016 को दायित्वों के ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जिससे एससीओ में शामिल होने की औपचारिक प्रक्रिया शुरू हुई। उन्हें 2017 में पूर्ण सदस्य के रूप में नामित किया गया था।

चीन के प्रभुत्व को संतुलित करने और समूह के दबदबे को मजबूत करने के लिए मॉस्को ने लगातार एससीओ में भारत के प्रवेश का समर्थन किया है (व्लादिमीर, 2011)। हालाँकि, चीन ने मानकों और प्रक्रियाओं की कमी के बहाने भारत की सदस्यता पर आपत्ति जताई है। इसके बाद, चीन ने अमेरिका के नेतृत्व वाले अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा सहायता बल (आईएसएएफ) की योजनाबद्ध वापसी के मद्देनजर नए सदस्यों को प्रवेश देने पर अपनी अनौपचारिक रोक की समीक्षा करने का समर्थन किया है। चीन ने पाकिस्तान को पूर्ण सदस्य के रूप में स्वीकार करके भारत की सदस्यता के बदले में अपनी तैयारी कर ली है, जबकि पूर्ण सदस्य बनने की इच्छा रखने वाले अन्य देशों को टाल दिया गया है।

भारत की अपनी गणना है. मनमोहन सिंह सरकार (मई 2004 से मई 2014) के दौरान भारत एक अवसर को छोड़कर प्रधान मंत्री को एससीओ शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए नहीं भेजकर सावधान रहा, शायद मुख्य रूप से अमेरिका के साथ उसके संबंधों को नुकसान न पहुंचे। जब भाजपा सरकार सत्ता में आई, तो अमेरिका के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने के बाद भारत ने पूर्ण सदस्यता की ओर कदम बढ़ाया। भारतीय विश्वास का मानना था कि एससीओ की पूर्ण सदस्यता से अमेरिका नाराज नहीं होगा।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन और एससीओ के दो लघु-पार्श्व संगठनों में एक समान विशेषता है: रूस और चीन सदस्य हैं। संभवतः, भारत को उम्मीद है कि रूस चीन के *मुकाबले* जांच और संतुलन की भूमिका निभाएगा। रूस को उम्मीद है कि भारत चीन के *मुकाबले* संतुलनकर्ता की भूमिका निभाएगा । भारत के लिए, एससीओ उसकी मध्य एशियाई कूटनीति के संदर्भ में भी एक महत्वपूर्ण निहितार्थ रखता है, जिसे अभी तक राजनीतिक और आर्थिक रूप से पूरी तरह से खोजा जाना बाकी है।

भारत के लिए, रूस के साथ उसके संबंध रक्षा उपकरणों और ऊर्जा संसाधनों के अधिग्रहण के *साथ-साथ* चीन और अमेरिका के राजनयिक कार्ड के मामले में अपरिहार्य हैं, हालांकि भारत और रूस के बीच द्विपक्षीय व्यापार का महत्व भारत की तुलना में कम हो गया है । - सोवियत काल.

4.2. जापान दूसरा करीबी देश

भारत के साथ दूसरे सबसे करीबी संबंधों वाले देश के रूप में रूस के बाद जापान का नंबर आता है। [22] यह कहना संभव हो सकता है कि हाल की अंतरराष्ट्रीय स्थितियों के कारण जापान रूस से अधिक महत्वपूर्ण होगा, जहां रूस चीन के साथ सहयोगात्मक है और भारत के लिए इंडो-पैसिफिक का महत्व बढ़ रहा है।

इस खंड को पहले ही समाप्त करने के लिए, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा समकालीन घनिष्ठ द्विपक्षीय संबंधों को आगे लाने वाले दो प्रमुख इंजन हैं। दूसरे शब्दों में, घनिष्ठ संबंध दोनों देशों के विश्व दृष्टिकोण, हितों और लक्ष्यों के बीच बढ़ते अभिसरण का परिणाम हैं। किसी न किसी रूप में ये दोनों कारक चीन के उद्भव से संबंधित हैं। 2006 की शुरुआत में, यह बताया गया था कि 'उभरते एशिया में, दो प्रमुख गैर-पश्चिमी लोकतंत्र, भारत और जापान, स्वाभाविक सहयोगी की तरह दिखते हैं क्योंकि चीन उन्हें एक साथ लाता है' (चेलानी, 2006, पृष्ठ 221)।

भारत के कूटनीतिक इतिहास से देखा जाए तो रूस के साथ भारत के घनिष्ठ संबंध जापान से कहीं अधिक हैं। वास्तव में, भारत के साथ जापान के संबंध एक हालिया घटना है जो 1990 के दशक के बाद से पिछली तिमाही शताब्दी के दौरान सामने आई है। [23]

जापान-भारत संबंधों में परिवर्तन सोवियत संघ के विघटन, अमेरिका की शक्ति के सापेक्ष ह्रास के साथ एशिया में अमेरिकी नीति के बदलाव और विशेष रूप से चीन के तेजी से उभरने की पृष्ठभूमि में हुआ है।

वास्तविक रूप से कहें तो, जैसा कि भारत की विदेश नीति मैट्रिक्स के विभिन्न पहलुओं से पता चलता है, इस समय भारत की मुख्य विदेश नीति थिएटर मुख्य रूप से क्षेत्रीय स्तर (इंडो-पैसिफिक) और स्थानीय स्तर (दक्षिण एशिया) तक ही सीमित है। समय बीतने के साथ और इन दो स्तरों पर अपने हितों के एकीकरण के बाद, भारत वैश्विक स्तर पर अधिक सक्रिय हो सकता है। वैश्विक स्तर पर अधिक सक्रिय होने से पहले भारत को अभी भी समय की आवश्यकता हो सकती है। क्षेत्रीय स्तर पर रूस की उपस्थिति अपर्याप्त है जबकि जापान की उपस्थिति (अमेरिका के साथ) चीन के *मुकाबले* एक प्रभावी साझेदारी है। जापान के लिए भी, भारत इंडो-पैसिफिक में एक विश्वसनीय सहयोगी भागीदार हो सकता है। संक्षेप में, इस समय, जापान और भारत, सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, परस्पर अपरिहार्य भागीदार बन गए हैं: जापान के लिए, चीन के उदय से निपटने के लिए, कम से कम आर्थिक अवसरों का उपयोग करने के लिए; और भारत को एक प्रमुख शक्ति बनने में समय लगेगा।

जापान और भारत के घनिष्ठ संबंधों के विकास को हॉप, स्टेप और जंप की ट्रिपल जंप के रूप में वर्णित किया जा सकता है: 1990 का दशक, 2000 का दशक और फिर 2010 का दशक। जापान-भारत संबंधों में

अनुकूल सुधार, जो 1990 के दशक में महज एक नदी के रूप में शुरू हुआ, 2000 के दशक की शुरुआत में एक धारा में बदल गया। 2005 के आसपास, इसने एक प्रमुख नदी का पूरा वेग प्राप्त कर लिया था।

द्विपक्षीय संबंधों का ऐसा कायापलट दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों, कैबिनेट मंत्रियों और अन्य उच्च सरकारी अधिकारियों की आपसी वीआईपी यात्राओं की संख्या से स्पष्ट रूप से स्पष्ट है। 1980 के दशक में वीआईपी की केवल 16 पारस्परिक यात्राएँ हुईं, लेकिन 1990 के दशक में 27, 2000 के दशक में 84 और 2010 के पहले भाग में 47 यात्राएँ हुईं। आपसी वीआईपी यात्राओं में धीरे-धीरे लेकिन तेज बढ़ोतरी दोनों देशों के बीच मेलजोल को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। 2016 के जापान-भारत परमाणु समझौते ने द्विपक्षीय संबंधों की एक बड़ी परिणति का संकेत दिया (तामारी, 2017, पीपी. 232-237)।

इन घनिष्ठ संपर्कों ने जापान और भारत के प्रधानमंत्रियों के बीच द्विपक्षीय वार्षिक शिखर सम्मेलन का मार्ग प्रशस्त किया जो 2005 में शुरू हुआ। जापान के लिए, भारत पहला और एकमात्र देश है, जबकि भारत के लिए, रूस के बाद जापान दूसरा देश है। दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी 2006 में स्थापित हुई थी। नतीजतन, भारत रूस के अलावा जापान के साथ भी घनिष्ठ संबंध बनाए रखता है।

इन द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने वाला एक अन्य प्रमुख कारक आर्थिक संबंध हैं। सबसे पहले, तथाकथित चीन जोखिम है। 2004 में, चीन (हांगकांग सहित) के साथ जापान का व्यापार 22 ट्रिलियन येन तक पहुंच गया, जिसने जापान और अमेरिका के बीच 20 ट्रिलियन येन के व्यापार की जगह ले ली। जिससे चीन जापान का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया। उस वर्ष, जुलाई 2004 में चीन के चोंगकिंग में एएफसी एशियाई कप फुटबॉल मैच में जापानी खिलाड़ियों के खिलाफ चीनी दर्शकों द्वारा स्पष्ट रूप से जापानी विरोधी व्यवहार प्रदर्शित किया गया था। इसके अलावा, 2005 में मार्च और अप्रैल के बीच, जापानियों को निशाना बनाते हुए बड़े पैमाने पर जापानी विरोधी दंगे हुए। चेंगदू, बीजिंग, शंघाई और अन्य शहरों में दुकानों में तोड़फोड़ हुई।

घटनाओं के इस मोड़ ने गंभीर चिंता पैदा कर दी। परिणामस्वरूप, 'उस वर्ष वसंत ऋतु में चीन में होने वाले जापानी-विरोधी प्रदर्शनों से प्रेरित होकर, कंपनियों ने इन देशों में अपेक्षित उच्च विकास और महत्वपूर्ण बाजार पैमाने का लाभ उठाने के लिए वियतनाम और भारत में अपना प्रत्यक्ष निवेश बढ़ाना शुरू कर दिया। चीन में निवेश संकेंद्रण के जोखिम को कम करें' (त्सुत्सुमी, 2005)। भारत के चीन विशेषज्ञ, कोंडापल्ली ने बताया कि: '2005 से ही चीन ने भारत के साथ संबंधों को "रणनीतिक" प्रकृति पर विचार करना शुरू कर दिया था' (कोंडापल्ली, 2013)। यह महज़ संयोग नहीं होगा.

दूसरे, भारत के लिए जापान का ODA एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (जैन 2017)। उभरते बाजार के रूप में भारत की उज्ज्वल संभावना के नजरिए से जापान अपने ओडीए के गंतव्य के रूप में भारत पर ध्यान दे रहा है। जापान का ओडीए जापान में नए व्यावसायिक अवसरों की खोज के अग्रदूत के रूप में काम कर रहा है (घोष, 2017, पीपी. 71-80)। उच्च आर्थिक क्षमता और विशाल आकार वाले भारत का मूल्यांकन जापान के ओडीए के प्रमुख हिस्से को प्राप्त करने के लिए एक सार्थक देश के रूप में किया गया था। वास्तव में, जापान 1986 से लेकर आज तक भारत को सबसे बड़ा ओडीए प्रदाता रहा है, 1998-2001 को छोड़कर जब जापान ने 1998 में भारत के परमाणु परीक्षण का विरोध करने के लिए *आर्थिक उपायों*[24] का इस्तेमाल किया था । वित्तीय वर्ष 2003 के बाद से, जापान के ओडीए का सबसे बड़ा हिस्सा रहा है। बारहमासी अग्रणी प्राप्तकर्ता चीन के स्थान पर भारत को दे दिया गया है। जापान दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा (डीएमआईसी) और चेन्नई-बेंगलुरु औद्योगिक गलियारा (सीबीआईसी) (चौधरी, 2014 ; कोजिमा, 2017) जैसे विभिन्न मेगा-बुनियादी ढांचे के विकास का समर्थन कर रहा है।

2011 में, जापान और भारत के बीच एक व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (CEPA) प्रख्यापित किया गया था। मोदी सरकार अपनी आर्थिक नीति में 'मेक इन इंडिया' और अपनी विदेश नीति में 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी'[25] को अपनाती है, जो भारत के प्रति जापान के सक्रिय और दूरदर्शी रुख के साथ अच्छी तरह मेल खाती है। दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने 2016 के अपने संयुक्त बयान में एक्ट ईस्ट पॉलिसी और फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक रणनीति के महत्व पर जोर दिया।[26,27,28]

4.3. 4.3 चीन कारक

जापान-भारत मेल-मिलाप में आर्थिक परिस्थितियाँ निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण कारक थीं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण कारक सुरक्षा नीति है, जिसे सामान्य प्राथमिकता के रूप में चीन के उदय से निपटने के लिए डिज़ाइन किया गया है। एक स्पष्ट नीति निर्देश के आधार पर शुरुआत करने के बजाय, जापान और भारत दोनों द्वारा अपनाई गई आपसी मेलजोल की नीतियां आर्थिक और सुरक्षा दोनों मोर्चों पर दोनों देशों की विदेश नीति के उद्देश्यों में 2000 के बाद से क्रमिक अभिसरण के लिए आकस्मिक समय का परिणाम थीं। भारत के जापान विशेषज्ञों में से एक ने सुझाव दिया है कि चीन कारक सामने आ गया है, और इसने भारत-जापान संबंधों में प्रमुख महत्व प्राप्त कर लिया है (जैन, 2007 ; वर्मा, 2013, पृष्ठ 52)।

उनकी चीन नीतियों के परिप्रेक्ष्य से देखने पर, दोनों देशों की नीतिगत आवश्यकताओं को आर्थिक क्षेत्रों में जुड़ाव और सुरक्षा के संदर्भ में हेजिंग के साथ दोनों देशों को एक साथ लाने के रूप में भी माना जा सकता है, हालांकि हेजिंग और जुड़ाव का उपयोग इन दिनों बहुत कम किया जाता है। अमेरिका, जहां इस वाक्यांश की उत्पत्ति हुई। संलग्नता और बचाव की इसी दोतरफा नीति ने अमेरिका और चीन के अन्य पड़ोसियों द्वारा चीन के प्रति अपनाए गए दृष्टिकोण को आधार बनाया, भले ही तीव्रता की विभिन्न डिग्री के साथ। भारत की संलग्नता और बचाव की दोहरी नीति शीत युद्ध काल के बाद एक नई नीति है। शीत युद्ध के दौरान, भारत अपनी अपर्याप्त शक्ति के कारण ऐसी जोखिम भरी रणनीति नहीं अपना सकता था। और इस प्रकार यह केवल सहभागिता की नीति अपना सकता है।

संलग्नता और हेजिंग नीति को 2000 और 2010 के दशक में चीन के मुखर बाहरी झुकाव के प्रति भारत की प्रतिक्रिया के रूप में माना जा सकता है, खासकर जब से शी जिनपिंग 2012 में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव के रूप में चीन की सत्ता में पहुंचे। उन्होंने *चीन के सपने* के महत्व को रेखांकित किया । उनके चीनी सपने को 'दो 100' की प्राप्ति के रूप में वर्णित किया गया है: चीन का 2020 तक एक 'मध्यम रूप से संपन्न समाज' बनने का भौतिक लक्ष्य, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की 100वीं वर्षगांठ, और चीन का पूर्ण रूप से आधुनिकीकरण लक्ष्य 2049 तक विकसित राष्ट्र, पीपुल्स रिपब्लिक की 100वीं वर्षगांठ' (कुह्न, 2013)। दूसरे शब्दों में, चीन का सपना एक राष्ट्रीय निर्माण परियोजना है जो एक शक्तिशाली सेना के साथ एक समृद्ध महाशक्ति का निर्माण कर रही है (मिफ्यून, 2016, पृष्ठ 31)। चीन की मुखर नीतियों से उसके दो सपनों को हासिल करने की संभावना बनी रहेगी।

शायद, जब चीन को अपना सपना साकार हो जाएगा, तो वह अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था निर्माण की क्षमता हासिल कर लेगा। हालाँकि, यह स्पष्ट नहीं है कि चीन अपनी क्षमता के आधार पर कौन से ठोस संस्थान और प्रणालियाँ बनाएगा। इस संबंध में भारत की महत्वाकांक्षाएं चीन से भी अधिक अपारदर्शी हैं। चीन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्यों में से एक है और एआईआईबी और बीआर पहल जैसी विभिन्न योजनाओं को मूर्त रूप दे रहा है, जो एक नई विश्व व्यवस्था का प्रतीक है, जबकि भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य नहीं है और उसके पास ऐसी कोई योजना नहीं है। चीन।

इस तरह से देखा जाए तो आने वाले वर्षों में इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन फैक्टर के गायब होने की संभावना नहीं दिख रही है। क्षेत्र में, जापान और भारत, सबसे अधिक प्रभावित देश, अपने करीबी रिश्ते जारी रखेंगे और आसियान देशों, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका के साथ मिलकर काम करेंगे, यहां तक कि नेताओं अबे और मोदी के बीच व्यक्तिगत रूप से करीबी रिश्ते से परे भी (होरिमोटो, 2014ए) . यद्यपि, शीर्ष नेताओं के बीच व्यक्तिगत संबंध द्विपक्षीय राजनयिक संबंधों पर कमोबेश प्रभाव डालते हैं। आबे, जो एक *सक्रिय विदेश नीति को* बढ़ावा देते हैं, मोदी की तुलना में घनिष्ठ संबंध रखने के लिए अधिक इच्छुक प्रतीत होते हैं (बसु 2016)।

इसके अतिरिक्त, हमें एक और संभावना से इंकार नहीं करना चाहिए कि भारत और पाकिस्तान के बीच जारी तनाव भारत को अमेरिका, चीन, रूस, पाकिस्तान, भारत और जापान के बीच शक्ति संबंधों को ध्यान में रखते हुए जापान के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखने का विकल्प चुनने के लिए प्रेरित करता है। संभवतः, भारत और चीन को अलग करने वाली शक्ति का अंतर धीरे-धीरे कम होने की उम्मीद की जा सकती है। इसके बाद, चीन, भारत के साथ सीधे टकराव के बजाय, दक्षिण एशिया में भारत के प्रभाव को सीमित करने या एशिया में भारत के राष्ट्रीय प्रभाव के विस्तार में बाधा डालने के लिए पाकिस्तान के साथ अपने सभी मौसम के राजनयिक संबंधों को बढ़ाने का विकल्प चुन सकता है। यह संभव है कि चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी), जो बीआर पहल का एक अभिन्न अंग है, चीन-पाकिस्तान संबंधों को बढ़ाएगा। इसके विपरीत भारत-पाकिस्तान संबंध और अधिक बिगड़ेंगे।

इसे दूसरे तरीके से कहें तो, 'स्थायी चीन-पाक साझेदारी को नई दिल्ली में लंबे समय से उपमहाद्वीप के भीतर भारत को रोकने और एशिया और उसके बाहर चीन के प्रतिद्वंद्वी के रूप में उभरने से रोकने के उद्देश्य से देखा गया है' (मोहन, 2012, पी) .21). पाकिस्तान के प्रति चीन के समर्थन से भारत-पाकिस्तान तनाव को तीव्र या कम से कम लगातार बनाए रखने की उम्मीद की जा सकती है: छद्म रूप से तनाव की स्थिति। [27]

नतीजतन, भारत एक महत्वपूर्ण जवाबी उपाय के रूप में जापान के साथ अपने संबंधों को बढ़ा सकता है। जापान के लिए, जो पूरी तरह से केवल अमेरिका पर निर्भर है, भारत एक अपरिहार्य देश है। आपसी रणनीतिक हितों से परे, जापान और भारत को एक स्थिर बहुध्रुवीय एशिया बनाने के लिए नेतृत्व करना चाहिए (राजगोपालन, 2012, पृष्ठ 252)। [28]

4.4. भारत की सतर्क विदेशी मुद्रा और मोदी की विदेश नीति

ऐसी पृष्ठभूमि में जापान-भारत और भारत की विदेश नीति के अन्य तत्व कैसे आगे बढ़ेंगे? स्पष्ट रूप से कहें तो, वर्तमान द्विपक्षीय संबंधों को पारस्परिक आवश्यकता और लाभ पर आधारित सुविधा के संबंध के रूप में जाना जा सकता है। दोनों देश अपने-अपने राष्ट्रीय हितों को अधिकतम करने के लिए अपने वर्तमान घनिष्ठ संबंधों का सर्वोत्तम उपयोग करेंगे।

हालाँकि, कोई यह देख सकता है कि चीन के प्रति दोनों देशों के बीच धारणाओं में सूक्ष्म अंतर मौजूद है, हालाँकि मूल रूप से दोनों देश आमतौर पर जुड़ाव और हेजिंग नीतियों को अपना रहे हैं। जापान अमेरिका और अन्य समान विचारधारा वाले देशों के सहयोग से चीन को एशिया में, विशेष रूप से पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में प्रमुख स्थान पर कब्जा करने से रोकने की कोशिश करता है, जबकि भारत का मूल अभिविन्यास चीन के साथ स्थिर संबंध बनाए रखना है।[28,29]

जब मोदी सरकार सत्ता में आई, तो ऑस्ट्रेलिया नेशनल यूनिवर्सिटी के सैंडी गॉर्डन ने सरकार के 'दोनों छोरों को बीच के खिलाफ खेलने' के प्रयास पर ध्यान दिया, खासकर जब से यह दृष्टिकोण भारतीय विदेश नीति की एक उत्कृष्ट विशेषता रही है। इस परिदृश्य के तहत, भारत चीन से आर्थिक और संभावित सीमा समझौते के संदर्भ में सर्वोत्तम सौदे की तलाश करेगा, साथ ही अमेरिका और जापान जैसी शक्तियों के साथ चीन के संभावित कठिन उदय के खिलाफ अपनी सुरक्षा बनाए रखने का प्रयास करेगा (गॉर्डन, 2014)।

इसी तरह, भारत के पूर्व विदेश सचिव कंवल सिब्बल ने टिप्पणी की: 'चीन में जापान का आर्थिक दांव बहुत बड़ा है; चीन के हमारे साथ निकटता और उसकी शक्ति से हमारे सीधे संपर्क को देखते हुए, चीन में हमारा अपना राजनीतिक और आर्थिक दांव ऊंचा है। न तो जापान और न ही भारत चीन के साथ टकराव चाहता है, लेकिन उभरते चीन द्वारा शक्ति के किसी भी विघटनकारी अभ्यास के खिलाफ रक्षा की रेखाएं बनाने की जिम्मेदारी दोनों की है' (सिब्बल, 2014)।

मई 2014 में सत्ता में आने के बाद से प्रधान मंत्री मोदी अपनी विदेश नीति का अभ्यास कर रहे हैं, जैसा कि दो विशेषज्ञों ने भविष्यवाणी की है। 9 जून 2014 को राष्ट्रपति मुखर्जी का संसदीय संबोधन विशेष रूप से मोदी की नीतिगत रूपरेखा का खुलासा कर सकता है: 'हम अपने मूल्यों की ताकत को व्यावहारिकता के साथ जोड़ते हुए, प्रबुद्ध राष्ट्रीय हित के आधार पर अपनी अंतरराष्ट्रीय भागीदारी को आगे बढ़ाएंगे।' [29]

यहां प्रस्तुत मैट्रिक्स से पता चलता है कि मोदी एक समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिए आर्थिक विकास में तेजी लाने और रक्षा क्षमताओं का विस्तार करने की अपनी नीति का अभ्यास कर रहे हैं। मोदी के लिए, एक मजबूत अर्थव्यवस्था का मतलब न *केवल* अर्थव्यवस्था है, बल्कि उनकी कूटनीति का बुनियादी ढांचा भी है: 'एक मजबूत अर्थव्यवस्था प्रभावी विदेश नीति का आधार है।' [30] ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपनी विदेश नीति को भूराजनीति के बजाय भू-अर्थशास्त्र के नजरिए से लागू कर रहे हैं।

फिर भी, वह घरेलू राजनीति बनाम विदेश नीति की दुविधा का सामना करने के लिए मजबूर हैं। उदाहरण के लिए, 1 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के आर्थिक लाभ वाले व्यापार सुविधा समझौते का मुद्दा उठा है। भारत अपनी कृषि खरीद के संबंध में चार साल की छूट अवधि के साथ दिसंबर 2013 में बाली में इसमें शामिल होने के लिए सहमत हुआ। हालाँकि, जुलाई 2014 में, किसानों की चिंताओं के कारण भारत पीछे हट गया। ऐसी प्रवृत्ति 2013 में शुरू की गई क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (आरसीईपी) के मामले में देखी जा सकती है, जिसे 2015 तक समाप्त किया जाना था (2017 तक बढ़ाया गया)।

मेक इन इंडिया के उनके नारे को भारत में उपभोक्ताओं और अन्य संबंधित पक्षों के हितों के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। उन्हें स्थानीयता बनाम वैश्विकता के कठिन राजनीतिक द्वंद्व का सामना करना होगा।

5. निष्कर्ष

जापान हर साल गर्मियों और शरद ऋतु में तूफान से प्रभावित होता है। जब जापान मौसम विज्ञान एजेंसी भविष्यवाणी करती है कि एक तूफान जापान की ओर बढ़ रहा है, तो एजेंसी यह नहीं कह सकती कि यह कब और कहाँ हमला कर सकता है। इसी तरह, ऐसा प्रतीत होता है कि भारत अब एक वैश्विक शक्ति की स्थिति की ओर बढ़ रहा है और एक प्रमुख शक्ति के रूप में परिवर्तित हो रहा है, लेकिन यह 'कब' घटित हो सकता है, यह अभी भी अप्रत्याशित है।

5.1. चर: अमेरिका, चीन और उनके आपसी संबंध

भविष्य में एक प्रमुख शक्ति का पद संभालने की भारत की यात्रा पर विभिन्न प्रभावों का प्रभाव पड़ने की संभावना है। उनमें से, अमेरिका और चीन क्षेत्रीय स्तर (इंडो-पैसिफिक क्षेत्र) पर सबसे प्रभावशाली कारक हो सकते हैं।

कई भारतीय समाचार पत्रों ने भविष्यवाणी की कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प रक्षा संबंधों और आतंकवाद विरोधी सहयोग पर विशेष जोर देकर भारत-अमेरिका रणनीतिक संबंधों को बढ़ावा देंगे। प्रधानमंत्री मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के तुरंत बाद और उद्घाटन के बाद ट्रम्प से बात करने वाले पांचवें विश्व नेता थे। [31] ट्रम्प और मोदी के बीच

इजराइल और इस्लामिक कट्टरवाद को लेकर निश्चित रूप से एक समान धारणा है। अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को किनारे रखते हुए, कोई भी निश्चित रूप से नहीं जानता कि ट्रम्प की प्रसिद्ध अप्रत्याशितता के कारण भारतीय-अमेरिकी संबंधों का क्या होगा।

फिलहाल, शायद, ट्रम्प प्रशासन की मुख्य चिंता यह है कि चीन, पश्चिमी प्रशांत, उत्तर कोरिया और मध्य पूर्व के दलदल जैसे एशियाई मुद्दों को कैसे संबोधित किया जाए। दक्षिण एशिया और हिंद महासागर को परिधिगत मुद्दों के रूप में रखा जाएगा। इसलिए, भारत इंतजार करने और यह देखने में सक्षम हो सकता है कि अमेरिका-चीन संबंध कैसे विकसित होते हैं। इनके विकास के साथ-साथ भारत अपनी विदेश नीति को भी तैनात कर सकता है।[30,31,32]

5.2. एक प्रमुख शक्ति के रूप में भारत का सैद्धांतिक निरूपण

यदि हम यह मान लें कि भारत एक प्रमुख शक्ति बनने के कगार पर है, तो इसके उद्भव की सैद्धांतिक व्याख्या प्रदान करना आवश्यक हो सकता है। 2000 के दशक तक भारत में ऐसे पहलुओं का पूरी तरह से अभाव हो गया था। 2010 के दशक में प्रवेश करते ही, जब भारत ने अपनी प्रगति दिखाई, तो विशेष रूप से भारत के रणनीतिक समुदाय के बीच कुछ हलचलें दिखाई दीं।

माहौल को प्रतिबिंबित करते हुए, रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान (रक्षा मंत्रालय के तहत) ने 2012 से *अर्थशास्त्र और कौटिल्य पर विभिन्न सेमिनार शुरू किए। अर्थशास्त्र*[32] शासन कला, आर्थिक नीति और सैन्य रणनीति पर एक प्राचीन भारतीय ग्रंथ है, जो संस्कृत में लिखा गया है। कौटिल्य को परंपरागत रूप से इस ग्रंथ के लेखक के रूप में श्रेय दिया जाता है। भारत में, इस ग्रंथ की तुलना अक्सर गर्व से चीन की सन त्सू की *द आर्ट ऑफ वॉर* से की जाती है। यह कहा जा सकता है कि *अर्थशास्त्र* भारत की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का स्रोत है (आईटीओ, 2015)।

पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और भारत के रणनीतिक समुदाय के प्रमुख सदस्यों में से एक माने जाने वाले शिवशंकर मेनन ने अक्टूबर 2014 में एक सेमिनार के दौरान जोर देकर कहा था कि भारत के रणनीतिक विचार विदेशों से आयात किए गए हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि इसके बजाय उन्हें अधिकतम रणनीतिक स्वायत्तता मिलनी चाहिए और हर किसी को *अर्थशास्त्र पढ़ना चाहिए।*[33]

जब 2012 में इंडियन एसोसिएशन ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज का पहला सम्मेलन आयोजित किया गया था, तो अमिताभ मट्टू ने अपनी शुरुआती टिप्पणियों में इसकी स्थापना को बधाई दी थी, लेकिन साथ ही चेतावनी दी थी: 'यदि एशिया केवल आर्थिक विकास और विशिष्ट उपभोग और संबंधित संघर्ष की तलाश में पश्चिम की नकल करता है आर्थिक संसाधनों और सैन्य कौशल पर, एशियाई सदी में "पूर्व का बदला" और "उसकी सभी जीतें" "वास्तव में भयानक" रहेंगी (मट्टू, 2012)।

जो भी हो, भारत के अपने सैद्धांतिक अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अनुसरण अभी भी एक प्रारंभिक स्तर पर है। इस कारण से, भारत अपने दांव के रूप में एक सैद्धांतिक आधार तैयार करने के लिए अपने राजनीतिक क्लासिक्स से शुरुआत करने से बच नहीं सकता है।

2010 के दशक में प्रवेश करते हुए, भारत ने अपनी शक्ति में वृद्धि को वैध बनाने के लिए तैयार किए जाने वाले नए अंतर्राष्ट्रीय ढांचे के साथ-साथ प्रमुख शक्ति का दर्जा हासिल करने के उपायों और योजनाओं का पता लगाना शुरू कर दिया है। शायद यही वह तरीक़ा है जिसके ज़रिए भारत एशिया और दुनिया में सत्ता परिवर्तन पर प्रतिक्रिया देने की कोशिश करता है। भारत को आम तौर पर भविष्य की एक प्रमुख शक्ति के रूप में पहचाना जाता है। हालाँकि, वैधीकरण के लिए, भारत को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य आख्यान तैयार करने की आवश्यकता है, हालांकि यह एक कठिन कार्य और चुनौती हो सकती है। संभवतः, इनमें से एक कीवर्ड समावेशिता होगा जैसा कि भारत ने पिछले सात दशकों में प्रतिपादित किया है। इस तरह के आख्यानों को साकार करने के लिए, जापान-भारत संबंधों को इस तरह से ढाला जाना चाहिए जो न तो विशेष हो और न ही चीन के प्रति विरोधी हो (आईटीओ, 2013, पीपी. 113-131; सिंह, 2013, पीपी. 133-152)। सबसे वरिष्ठ पूर्वी एशियाई विशेषज्ञ केसवन ने बताया कि: 'भारत किसी एक देश के आधिपत्य से मुक्त एक पारदर्शी, समावेशी और लोकतांत्रिक क्षेत्रीय व्यवस्था के निर्माण में विश्वास करता है' (केसवन, 2015)।

5.3. भारत के एक प्रमुख शक्ति के रूप में कायापलट का निहितार्थ

मोदी का सत्ता में आना हितों और अवसरों का एक ऐतिहासिक संगम है। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद, वाशिंगटन सर्वसम्मति, बीजिंग सर्वसम्मति और अरब स्प्रिंग जैसे विभिन्न मॉडलों का प्रयास किया गया है, लेकिन उन्हें अधिक सफलता नहीं मिली। अब उदार लोकतांत्रिक व्यवस्था के तहत एक प्रमुख शक्ति के रूप में विकसित होने का भारत का प्रयास बड़ा ऐतिहासिक महत्व रख सकता है।

इस लिहाज से भारत के भविष्य को सबसे अधिक उत्सुकता से देखने वाला देश चीन ही हो सकता है। अपने अंतिम लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारत की सफलता चीन के लिए सबसे बड़ा झटका होगी, जो लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए बढ़ते शोर को पूरा करने की तुलना में आर्थिक समानता की घरेलू मांगों को पूरा करने में तेजी ला रहा है।

मोदी और उनके उत्तराधिकारी घरेलू नीतियों और विदेश नीतियों का सफलतापूर्वक समन्वय और समायोजन कैसे कर सकते हैं? इन चुनौतियों पर काबू पाने के बाद, भारत भविष्य में एक प्रमुख शक्ति बनने की दिशा में एक बड़ा कदम उठा सकता है। किसी को भी इस धारणा पर आपत्ति नहीं होगी कि एशिया में सत्ता परिवर्तन या बदलाव हो रहा है। सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा यह हो सकता है कि क्या यह बदलाव एक आदर्श बदलाव साबित होगा, जिससे एक नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का उदय होगा। इसके साथ ही, भारत को अपना दृष्टिकोण सामने रखना होगा कि वह एक वैश्विक प्रमुख शक्ति के रूप में कैसे कार्य करेगा। के. सुब्रमण्यम ने उनकी मृत्यु के तुरंत बाद उनके अनुरोध पर सार्वजनिक किए गए एक लेख में भारत की भव्य रणनीति [34] के महत्व पर जोर दिया (सुब्रमण्यम, 2012) (मई 2017)।[33]

संदर्भ

[1] प्रमुख शक्तियों में भारत की सदस्यता इस पर निर्भर होगी कि एक महाशक्ति के रूप में अमेरिका भारत को एक प्रमुख शक्ति के रूप में मान्यता देता है या नहीं (नायर और पॉल, 2004, पृष्ठ 113)।

[2] उस संधि के अनुच्छेद IX में कहा गया है कि 'हमले या उसके खतरे के अधीन होने की स्थिति में, उच्च अनुबंध करने वाली पार्टियाँ तुरंत ऐसे खतरे को दूर करने के लिए आपसी परामर्श में प्रवेश करेंगी और शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उचित प्रभावी उपाय करेंगी। देश.' लेख http://mea.gov.in/biliteral-documents.htm?dtl/5139/Treaty+of+ पर उपलब्ध है (20 मार्च 2017, अंतिम अभिगमन तिथि)।

[3] द गार्जियन (1971, 10 अगस्त) ने इसे 'गुटनिरपेक्षता की भारतीय नीति से प्रस्थान' के रूप में वर्णित किया।

[4] इसके विपरीत, चीन ने बिना संरेखण के अपनी स्वतंत्र विदेश नीति को लगातार लागू किया है। 1960 के दशक की शुरुआत में चीन ने अन्य देशों के साथ गठबंधन करना बंद कर दिया, जब सोवियत संघ के साथ उसके घनिष्ठ संबंध ख़राब हो गए।

[5] 2010 में जब दक्षिण अफ्रीका ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में शामिल हुआ तो ब्रिक्स ने अपना संक्षिप्त नाम बदलकर ब्रिक्स कर लिया।

[6] टाइम्स ऑफ इंडिया (2011, 18 दिसंबर, पेपर संस्करण)।

[7] द इकोनॉमिस्ट (30 मार्च 2013), http://www.economist.com/news/briefing/21574458-india-poized-become-one-four-largest-military-powers-world-end पर उपलब्ध है (3 मार्च 2017, अंतिम अभिगमन तिथि)।

[8] भारत में इस शब्द की कोई स्पष्ट परिभाषा मौजूद नहीं है। आम तौर पर, जो लोग विदेशी और राष्ट्रीय सुरक्षा मुद्दों में शामिल होते हैं उनमें विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, थिंक-टैंक विश्लेषक, विदेश और रक्षा मंत्रालय के पूर्व अधिकारी और पत्रकार जैसे विशेषज्ञ शामिल होते हैं। वे भारत की विदेश नीतियों को प्रभावित करने वाले जनमत निर्माता-सह-नेता हैं।

[9] हू जिंताओ (चीन के तत्कालीन राष्ट्रपति) के विदेश नीति सलाहकार माने जाने वाले वांग जिसी (पेकिंग विश्वविद्यालय के अमेरिकी अध्ययन केंद्र) के साथ एक साक्षात्कार 5 अक्टूबर 2012 (पेपर संस्करण) के असाही शिंबुन में छपा। उन्होंने कहा कि यह लाइन भारत और जापान पर लागू नहीं होती।

[10] प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री विजय गोयल, वाजपेयी को लगभग 30 वर्षों से जानते हैं। जब गोयल ने पूछा कि उनका पसंदीदा नेता कौन है, तो उन्होंने नेहरू का नाम लिया, जो http://muraleedharan.tripod.com/legends_vajpayee.html पर उपलब्ध है (2 मार्च 2017, अंतिम बार देखने की तारीख)।

[11] मोदी ने चीन को शांत करने, उपयोग करने और संयम बरतने की अपनी विदेश नीति शुरू की है (ताकेनाका, 2014) ।

[12] 7 फरवरी 2015 को प्रधानमंत्री ने भारतीय मिशनों के प्रमुखों से मुलाकात की, जो http://www.pmindia.gov.in/en/news_updates/pm-to-heads-of- Indian-missions/?comment=disable पर उपलब्ध है (21 मार्च 2017, अंतिम अभिगमन तिथि)।

[13] उनका भाषण 'भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन' था, जो https://www.iiss.org/en/events/events/archive/2015-f463/july-636f/fullerton-lecture-jai शंकर-f64e (20) पर उपलब्ध है। मार्च 2017, अंतिम अभिगमन तिथि)।

[14] भारत और अमेरिका में, भारत की विदेश नीति के जाने-माने विशेषज्ञों ने जयशंकर के भाषण पर टिप्पणी करने में देर कर दी। टेलिस (2016), मोहन (2016) और हंट्समैन एंड गोपालस्वामी (2015) देखें ।

[15] विश्व विकास संकेतक डेटाबेस, सकल घरेलू उत्पाद 2016, http://databank.worldbank.org/data/download/GDP.pdf पर उपलब्ध है (20 मई 2017, अंतिम अभिगमन तिथि)।

[16] एसआईपीआरआई फैक्ट शीट, विश्व सैन्य व्यय में रुझान, 2016, https://www.sipri.org/sites/default/files/Trends-world-military-expenditure-2016.pdf पर उपलब्ध है (20 मई 2017, अंतिम बार देखने की तिथि) .

[17] इसकी रिपोर्ट में यह भी अनुमान लगाया गया है कि 'दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में, चीन के भारत से आगे रहने की उम्मीद है, लेकिन यह अंतर 2030 तक कम होना शुरू हो सकता है। भारत की आर्थिक विकास दर बढ़ने की संभावना है जबकि चीन की धीमी गति से (उक्त)।'

[18] सबसे दिलचस्प संसाधनों में से एक और मेरे उद्देश्य से ओवरलैप होने वाला संसाधन कर्नाड (2015) है । जैसा कि पुस्तक 'व्हाई इंडिया इज़ नॉट ए ग्रेट पावर' (अभी तक) के शीर्षक से पता चलता है, यह अपनी तरह की पहली पुस्तक है जिसमें भारत के एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरने पर चर्चा की गई है। कर्नाड ने अफसोस जताया कि यह आर्थिक और कठोर शक्ति नीति अभिविन्यास के बीच संयोजन की कमी के कारण है और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सैन्य और आर्थिक प्रक्षेप पथ एक दूसरे के पूरक हैं। गांगुली (2010), खिलनानी और अन्य। (2012), बाजपेयी और पंत (2013) हमें भारत की विदेश नीति की उत्कृष्ट परीक्षाएँ दिखाते हैं, लेकिन वे मोदी सरकार के तहत अवधि को कवर नहीं करते हैं। मेलोन एट अल. (2015) को 700 से अधिक पृष्ठों वाला भारत की विदेश नीति का विश्वकोश कहा जा सकता है, लेकिन यह उल्लेखनीय है कि इसमें प्रमुख शक्ति की स्थिति या जापान जैसे मुद्दों को संबोधित करना शामिल नहीं है।

[19] उदाहरण के लिए, जापान के अखबार, सैंकेई शिंबुन (2014, 7 अक्टूबर, पेपर संस्करण) ने अमेरिका और जापान के प्रति मोदी के दृष्टिकोण और रुख को पारंपरिक रूप से जारी सर्वदिशात्मक विदेश नीति से अनियंत्रित बताया।

[20] 'मिनी-लेटरल' शब्द का उपयोग द्विपक्षीय और बहुपक्षीय के बीच स्थित देशों के एक छोटे समूह को नामित करने के लिए किया जा सकता है।

[21] 2016-17 में रूस के साथ भारत का व्यापार भारत के शीर्ष 25 देशों में नहीं है (वाणिज्य विभाग, भारत सरकार, निर्यात आयात डेटा बैंक, 16 अप्रैल 2017, http://commerce.nic.in/eidb/iecnttopn पर उपलब्ध है) .asp (20 अप्रैल 2017, अंतिम अभिगमन तिथि)।

[22] घनिष्ठ द्विपक्षीय संबंधों के हालिया विकास को दर्शाते हुए, विभिन्न प्रकाशन सामने आए हैं: खान (2017), बोराह (2017); मुखर्जी और याज़ाकी (2016) ।

[23] 1952 में आपसी संबंध स्थापित होने के बाद दोनों देशों ने एक संक्षिप्त हनीमून अवधि का आनंद लिया। हालाँकि, वे टिक नहीं पाए, क्योंकि संबंधों को बढ़ावा देने के प्रयास सामने आए शीत युद्ध के कारण विफल हो गए। दोनों देशों ने विदेश नीति और आर्थिक नीति के संदर्भ में असंगत नीति अभिविन्यास अपनाए। इसलिए, वर्तमान चरण को संभवतः दूसरा हनीमून काल माना जा सकता है। विस्तृत चर्चा के लिए, होरिमोटो (2016) देखें ।

[24] आर्थिक मंजूरी के बजाय विदेश मंत्रालय द्वारा उपयोग की जाने वाली एक आधिकारिक शब्दावली। विवरण के लिए, देखें (तामारी, 2017, पीपी. 226-227)।

[25] 'लुक ईस्ट पॉलिसी' को 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' में बदलें: सुषमा स्वराज,' एनडीटीवी (2014, 25 अगस्त), http://www.ndtv.com/india-news/time-to-change-look- पर उपलब्ध है। पूर्व-नीति-से-कार्य-पूर्व-नीति-सुषमा-स्वराज-653063 (2 मार्च 2017, अंतिम अभिगमन तिथि)।

[26] 20 अप्रैल 2015 को, चीन और पाकिस्तान ने 'शी जिनपिंग की पाकिस्तान यात्रा के दौरान एक सर्व-मौसम रणनीतिक सहकारी साझेदारी की स्थापना पर संयुक्त वक्तव्य' (द एक्सप्रेस ट्रिब्यून, 2015, 21 अप्रैल) द्वारा अपने संबंधों को उन्नत किया, जो https:/ पर उपलब्ध है।

/tribune.com.pk/story/873290/strategic-partnership-pakिस्तान-china- ties-hit-a-new-high/ (18 अप्रैल 2017, अंतिम अभिगमन तिथि)। सभी मौसम संबंधों को उनके द्विपक्षीय दस्तावेजों में बार-बार बताया गया है लेकिन यह पहली बार था कि उनके संबंधों को आधिकारिक तौर पर ऑल-वेदर स्ट्रैटेजिक को-ऑपरेटिव पार्टनरशिप के रूप में चित्रित किया गया था।

[27] हाउस फॉरेन अफेयर्स कमेटी (यूएस) के अध्यक्ष एड रॉयस ने 16 दिसंबर 2015 को अपने प्रारंभिक वक्तव्य में कहा, 'लेकिन जहां अमेरिका ने पाकिस्तान को गले लगाने में जल्दबाजी की, वहीं पाकिस्तान ने शायद ही प्रतिक्रिया व्यक्त की। पाकिस्तानी सरकारें आईं और गईं, लेकिन इसकी उत्तर-पश्चिमी सीमा आतंकवादियों की पनाहगाह बनी हुई है। अपनी सुरक्षा सेवाओं के साथ जिसे वह अच्छा इस्लामी आतंकवादी समूह मानता है, उसका समर्थन करते हुए, ये अच्छे समूह - पाकिस्तान की गणना के तहत - अफगानिस्तान को अस्थिर करते हैं और पड़ोसी भारत को धमकी देते हैं, जबकि सरकार उसी का विरोध करती है जिसे वह बुरा इस्लामी आतंकवादी समूह मानती है' (रॉयस, 2015) ।

[28] यह पुस्तक सराहनीय रूप से चार शक्तियों (चीन, अमेरिका, रूस और जापान) की सैन्य रणनीतियों पर प्रकाश डालती है।

[29] भारत के राष्ट्रपति में सभी कार्यकारी अधिकार निहित हैं, लेकिन व्यवहार में इसका प्रयोग प्रधानमंत्री मंत्रिपरिषद की मदद से करते हैं (भारत के संविधान का अनुच्छेद 53)।

[30] बिजनेस स्टैंडर्ड (19 अक्टूबर 2014), http://www.idsa.in/pressrelease/StudyofArthashastraImportantShinkarMenon पर उपलब्ध है (3 मार्च 2017, अंतिम बार देखने की तारीख)।

[31] द हिंदू (25 जनवरी 2017), http://www.thehindu.com/news/national/India-a-%E2%80%98true-friend%E2%80%99-Trump-tells-Modi/article17092065 पर उपलब्ध है .ece (3 मार्च 2017, अंतिम अभिगमन तिथि)।

[32] बिजनेस स्टैंडर्ड (2014, 19 अक्टूबर)। उन्होंने पिछले अवसर पर भी अर्थशास्त्र के अध्ययन के महत्व पर जोर दिया है, जो http://www.idsa.in/pressrelease/StudyofArthashastraImportantShivShankarMenon पर उपलब्ध है (3 मार्च 2017, अंतिम अभिगमन तिथि)।

[33] बिजनेस स्टैंडर्ड (2014, 19 अक्टूबर)। उन्होंने पिछले अवसर पर भी अर्थशास्त्र के अध्ययन के महत्व पर जोर दिया है, जो http://www.idsa.in/pressrelease/StudyofArthashastraImportantShinkarMenon पर उपलब्ध है ।

[34] हाल ही में, जैकब (2017) ने भी बताया कि 'अब समय आ गया है कि नई दिल्ली बड़ी तस्वीर पर ध्यान केंद्रित करे और वैश्विक भू-राजनीतिक परिदृश्य पर उभरती गलती रेखाओं को संबोधित करते हुए शुद्धतावादी पदों से बचें।'

International Journal of Trend in Scientific Research and Development ISSN: 2456-6470